Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11/93

श्री भुवनेश्वरी पीठ-परिचय

(पीठाम्नाय का संक्षिप्त और उत्सव, स्तुति, आरती आदि)

11/93

श्री भुवनेश्वरी माताजी

RELEASED

श्रावण, २०२७] [अगस्त, १९७०

हिन्दी—११वाँ संस्करण, ५००० प्रतियाँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री भुवनेश्वरी पीठ गोंडल (सौराष्ट्र) के आचार्य

रसेशाचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज

अखंड भूमंडलाचार्य अनंत श्री विभूषित भुवनेश्वरी पीठाधीश

रसेशाचार्य जगद्गुरु श्री चरणतीर्थ जी महाराज

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11/93

PRESENTED

श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल-सौराष्ट्र

१. भगवान् वेदव्यासने सर्व प्रथम अर्थात् श्री भगवद्गीताकी रचना के पहिले ब्रह्मसूत्र रचे। इसका उल्लेख भगवान् श्रीकृष्णने गीतामें किया है। बादमें १८ पुराण और पाँचवाँ वेद जिसको कहा जाता है वह महाभारत और हरिवंशकी रचना की। १८ पुराणोंमें देवीभागवत है जिसे 'भगवती भागवत' भी कहा जाता है। देवी भागवत सर्व पुराणोंमें श्रेष्ठ है। सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, राजस्थान, बंगाल, महाराष्ट्र, दक्षिण हिंद, नेपाल, आसाम और विदेश आदिमें देवीभागवतका ही पारायण सप्ताह किया जाता है। इसमें श्री भुवनेश्वरीकी महिमाके साथ अनेक ज्ञान-विज्ञान-तत्वज्ञान की कथा और चरित्र हैं, इसके अंतर्गत भुवनेश्वरी की कथा है जो अलग पुस्तक रूपमें प्रकटकी है। इसमें सत्यव्रत ब्राह्मण और सुदर्शन राजाकी रसिक कथा नवें अध्यायमें है।

२. गुजरात, कच्छ, काठियावाड़, महाराष्ट्र, आदि प्रदेश में आजतक सत्यनारायणकी कथा प्रचलित थी। अब श्रीभुवनेश्वरी माताकी कथा ही की जाती है। इस कठिन कालमें विविध सुखकी प्राप्ति और सांसारिक व्यावहारिक मानुषी और दैवी कष्टोंसे मुक्त होनेके लिये भुवनेश्वरी माँकी उपासना, पूजा-भक्ति, दर्शन सेवासे ही इस लोक-परलोकका कल्याण होता है। कलियुगमें भुवनेश्वरी माँ ही प्रजाका रक्षण-पालन-पोषण करने वाली समर्थ देवता हैं। विविध शास्त्रोंमें वर्णित सैकड़ों देवियोंकी सर्वोपरि अधिष्ठात्री हैं। सब देवियाँ इनकी सेवा कर रही हैं।

३. गिरनारकी अंबा माता, रांदल माँ, हरसिद्ध माता, सुंदरी भवानी, खोडीयार, आबुकी बड़ी अंबाजी, आशापुरा चामुंडा महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, गायत्री, पद्मावती, कामाक्षी, त्रिपुरसुंदरी, बाला, ललितांबा, जीवंतिका, मीनाक्षी, कन्याकुमारी आदि विश्वमें भिन्न-भिन्न धर्ममें भिन्न-भिन्न नामरूपसे प्रसिद्ध देवियाँ श्री भुवनेश्वरी माँकी अंशावतार हैं। सब भुवनेश्वरीकी सेवा और आज्ञामें प्रवृत्त रहती हैं।

४. ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, यम, वरुण, कुबेर विश्वेदेव, हनुमान्, गणपति, स्कंदकार्तिक स्वामी, क्षेत्रपाल, यक्ष, गंधर्व, विद्याधर, किन्नर असुर, दैत्य आदि श्री भुवनेश्वरी की भक्ति सेवा करते हैं। श्री रामचन्द्रजी, श्रीकृष्ण जैसे अवतारी पुरुष, सनत्कुमार, वाल्मीकि, वशिष्ठ, अगत्स्य, अत्रि, व्यास आदि ऋषि मुनियों, श्री शंकराचार्य आदि भूतकालीन और वर्तमान धर्माचार्यों, श्रीरामकृष्ण परमहंस, श्री विवेकानंद, श्री रमणमहर्षि, श्री अरविंद घोष आदि स्वर्गस्थ और वर्तमान संत-महंत भक्त पुरुष भी माँके भक्त थे और हैं।

५. पुराण-महाभारत आदिमें वर्णित भारतके और विश्वके चक्रवर्ती राजकर्ताओं, अशोक, चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य आदि और बा के महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी आदि प्राचीन अर्वाचीन महाराजाओं, महाकवि कालिदास,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भवभूति, भारवि, बाण आदि प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानों, कवियों, पंडितों और करोड़ों प्रजाजन भुवनेश्वरी के ही भक्त थे और हैं।

६. विश्वकी भिन्न-भिन्न प्रजा ईश्वरको भिन्न-भिन्न नामरूप आकार और वर्णनसे भजती हैं वह भी विविध नामरूप आकारकी देवियोंकी उपासना करती है।जैसे कि जैन और बौद्ध धर्ममें पदमावती देवीकी पूजा-भक्ति होती हैं, वह भुवनेश्वरी स्वरूप हैं। भिन्न-भिन्न देवियोंके स्तोत्रोंमें और चंडीपाठ आदि मंत्रशास्त्रके ग्रन्थोंमें पद्मावती देवीका वर्णन है। भुवनेश्वरीकी सेवा और भक्ति करनेसे विश्वकी सर्वदेवियों और देवताओंका पूजन, सेवा और भक्ति होती है और उत्तम फल मिलता है।

७. स्वर्ग, पाताल, चंद्रलोक, सूर्यलोक वैकुंठ नवग्रहोंके लोक और हमारी पृथ्वी सब अंतरिक्षमें हैं। इस प्रकार भुवनेश्वरीका मणिद्वीप सब लोकोंसे बड़ा और सब लोकोंसे ऊपर अंतरिक्षमें स्थित है। इस मणिद्वीपमें श्री भुवनेश्वरीका निवासस्थान चिंतामणि-गृह है। वह अनेक योजनोंके समान विस्तारवाला सुवर्ण और रत्नजटित हजारों स्तम्भवाला, जिसमें हजारों देवताओं तथा भक्तोंका समावेश हो सकता है, ऐसा विस्तृत है। उस चिंतामणि-गृहमें श्री भुवनेश्वरी देवी अपने पति श्री भुवनेश्वर महादेवके साथ विराजती हैं। वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र आदि तैंतीस मुख्य देवों, देवताओं, ग्रहोंके राजाओं, सब ऋतुके राजाओं, मूर्तिमान् चारों वेद, यक्ष, गन्धर्व, विद्याधर, किन्नर आदि उपदेवता, उनकी स्त्रियाँ आदि भुवनेश्वरीकी सेवामें सदा तत्पर रहती हैं। सब ब्रह्मांडका संचालन भुवनेश्वरी माँ करती हैं। उनकी सेवामें रहती हुई देवियाँ पृथ्वीपर मनुष्यके प्रत्येक शुभाशुभ कर्म गुप्त और प्रकट-घटनाओं को श्री भुवनेश्वरी माँसे प्रकट करती हैं। सत्य मार्गसे चलनेवालोंकी रक्षा करती हैं और अधर्मियोंको शिक्षा देती हैं।

८. मणिद्वीपके चिंतामणिगृहमें विराजतीं हुई माँके स्वरूपका वर्णन देवीभागवतमें दिया है वैसी नव यौवन-युक्त स्त्रीके माप और स्वरूपकी अंकुश पाश् वर मुद्रा धारण की हुई, श्वेत आरस (संगमरमरकी) देदीप्य-मान् मूर्ति गोंडलके भव्य मंदिरमें सं० २००२ सन् १९४६ वैशाख कृष्ण पक्षमें माँकी आज्ञासे शास्त्र-विधिसे बड़े समारंभसे प्रतिष्ठा कर पधरायी है, जिसका वर्णन प्रतिष्ठा-महोत्सवकी पुस्तिका में विस्तारसे दिया है।

९. विश्वके मनुष्य चाहे जिस धर्म या कौमके हों, प्रत्येक धर्म और कौम में भिन्न-भिन्न रूप, गुण, कर्म और क्रियासे अपनी कुलदेवी के रूपमें देवीका पूजन होता है। वह प्रत्येक देवी भुवनेश्वरीका स्वरूप हैं। विश्वके प्रत्येक मनुष्यपर भुवनेश्वरीका साम्राज्य चल रहा है। मनुष्योंमें, प्राणिमात्रमें और शक्तिस्वरूपमें जो तत्त्व रहा है वह भुवनेश्वरीकी शक्ति है। शरीरके प्रत्येक अंगकी शक्ति, स्त्री, संतान, धन, संसार, व्यावहारिक शक्ति, मन और बुद्धिकी शक्ति, शारीरिक मानसिक शक्ति, मनुष्यके प्रत्येक कार्यकी शक्ति, यह सब भुवनेश्वरीकी प्रेरणारूप शक्ति ही हैं। इस शक्तिसे ही मनुष्योंका सामाजिक, धार्मिक, व्यावहारिक और राजतंत्रादिक कार्य चलता है। जब मनुष्यमें भुवनेश्वरी प्रेरित शक्ति क्षीण होती है तब मनुष्योंका व्यवहार स्थगित होता है। इसलिए प्रत्येक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

धर्म, कौम और सम्प्रदायके मनुष्योंको चाहिए कि सब प्रकारकी शक्ति प्राप्त करने और उसे सुरक्षित रखनेके लिए भुवनेश्वरी माँकी सेवा और भक्ति करें।

१०. संसारी मनुष्य, सुखदुःख, हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वसे घिरा हुआ है। मनुष्य दुःख, विघ्न, संकट, रोग, दरिद्रता या अन्य संकटोंसे मुक्त होकर अपना और अपने कुटुंब परिवारका जीवन सुखमय व्यतीत होनेके लिए देव देवी, हनुमान्, गणपति, संत महात्मा, भगत, मंत्रतंत्र, जप-प्रयोग और पुरश्चरण आदिका आश्रय लेता है। उसमें निष्फल होनेसे उसका संसार नीरस और विषम बन जाता है। इस कलिकालमें फैले हुए जडवादमें जगतकी माता भुवनेश्वरी ही प्रजाकी सहायक बनाती हैं। भक्ति-भावनासे माँकी शरण में गया हुआ मनुष्य निराश नहीं होता। माँके भक्त माँकी संतान है। माँ भक्तोंको धर्मयुक्तपरोपकारपरायण जीवन बितानेकी सद्बुद्धि देती हैं। सब प्रकारकी सहायता और रक्षा करतीं है। दुःख,कष्ट, विघ्न-शारीरिक-मानसिक संतापोंसे मुक्त कर जीवनको शांत-सुखमय बनाती हैं। माँकी स्तुति भक्ति सेवासे सब देवीदेवताओंकी सेवा होती हैं और माँकी भक्तिसे सब देवीदेवता प्रसन्न होते हैं।

११. विविध धर्म और संप्रदायके आचार्य और अनुयायी अपने धर्मके जिस देवीदेवता या भगवानकी उपासना भक्ति करते हैं इसके साथ ही भुवनेश्वरी माँको अपना इष्ट मानकर और उनकी शरण लेकर सेवा-भक्ति कर सकते हैं। आजकल योगी, संयासी, महंत, साधुसंत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वैष्णव, जैन, बौद्ध, सिक्ख, पारसी, मुसलमान खिस्ती सब वर्ण और कौमके लाखों मनुष्य अपने-अपने धर्मके पालनके साथ भुवनेश्वरी माँकी भक्ति कर रहे हैं और गोंडलके मन्दिर में आकर सभी माँका दर्शन करके अपना जीवन सफल बनाते हैं।

१२. भुवनेश्वरी माँके रहने और विहारके दो स्थान हैं। एक मणिद्वीपमें चिंतामणिगृह में और दूसरा गोंडल श्रीपीठके धाममें। संध्याकी आरती के समय माँ गोंडल-मंदिरमें साक्षात् पधारती हैं।

१३. हम विश्वकी प्रजासे और खास कर भारतकी प्रजासे आग्रहके साथ कहना चाहते हैं कि वर्तमान काल विषम चल रहा है। धर्मका ह्रास हो रहा है, अधर्म फैल रहा है, नित्य नैमित्तिक कर्म नष्ट हो रहे हैं, यज्ञ यागादिक प्रायः कीर्तिके लिए बन रहे हैं। क्षमा, दया, दान, अहिंसा, शील, सत्य, दम, अस्तेय, अपरिग्रह आदि सद्गुण अस्त हो रहे हैं। चोरी, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, परस्वापहरण, निर्दयता, हिंसा, डकैती, खून, स्त्रियोंकी हत्या, एक दूसरे देशोंको अपने प्रभुत्व में रखनेकी कुटिल स्वार्थवृत्ति, मद, मोह, क्रोध, राक्षसी कर्म आदि रजोगुण तमोगुण प्रधान वातावरण फैल रहा है।

१४. धर्मका पराभव होते रहनेसे अधर्मसे बुद्धि विकृतहो रही है। प्रत्येक देश और भिन्न-भिन्न वृत्तिका जनसमाज अनेक कष्टोंसे घिरा हुआ है। इसी कारण वातावरण बिगड़नेसे अष्टग्रहोंकी युति जैसा ग्रहयोग होता है। विक्रम संवत् २०१८के पौष मास में आठ ग्रहकी युतिपर राहुकी दृष्टि थी, इस भयंकर योगका परिणाम सारे विश्वने भोगा है और भोग रहा है। इसका फल हमने उसी वर्ष प्रकट किया था। संवत् २०२८ तक उत्पात,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उल्कापात, राज्य परिवर्तन, पानीकी अधिकता, भूकंप, अग्नि-प्रकोप, रोग, युद्ध, परचक्रका आक्रमण, ट्रेन दुर्घटना, विमान आदि वाहनोका अकस्मात् आदिसे विनाश हो रहा है और भविष्य में अधिक होनेकी संभवना है। हम इन बातोंका संकेत और प्रकाशन प्रत्येक समय माताजी की आज्ञा-पत्रिकाओंमें प्रकट करते हैं। इन आगामी विनाशक तत्त्वोंसे अपना, अपने कुटुम्ब परिवारका और अपने देशका रक्षण करनेके लिए भुवनेश्वरी माँकी शरण लेकर उनकी भक्ति सेवा करना यही सर्व सुलभ उपाय है।

१५. माँका आदेश, आज्ञा है कि भारत के प्रत्येक मनुष्यको जहाँतक बन सके सत्यसात्त्विक वृत्तिका अवलंबन करना, प्रत्येक मनुष्यके प्रति सद्भाव, भ्रातृभाव और प्रेम रखना, रजोगुण तमोगुणसे उत्पन्न होनेवाले काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, ईर्षा आदि अशुभ भावोंको त्याग करनेकी सावधानी रखनी चाहिए। राजतंत्र ग्राहकोंको भी चाहिए कि जिस प्रकार हिंदूके नाते हस्ताक्षर करके भारतका राजतंत्र अपने हाथमें लिया गया है उसी प्रकार संचालन करनेसे और पूर्णतया प्रामाणिक सत्यनिष्ठ रहनेसे राजतंत्र अपने हाथमें रह सकता है। जो समय चल रहा है और जिस प्रकार अनिष्टतत्व फैल रहे हैं इसकी जिम्मेदारी राजतंत्र पर हैं। शास्त्रमें कहा है कि "राजा कालस्य कारणम्" राजकर्ता प्रचलित समयको उत्पन्न करनेवाला है। सनातम वेदधर्म, जिसमें सब धर्मोंके सच्चे सिद्धांत और सद्गुणोंका समावेश है, विश्वके सभी धर्म वेद-धर्मकी शाखाएं हैं, किसी भी धर्मके सिद्धांतोंसे वेदधर्म विरुद्ध नहीं हैं, इस प्रकारसे राजधर्म स्थापित करनेसे देशकी स्वतंत्रता स्थिर और दृढ़ होगी और अनिष्ट तत्वोंका नाश होगा, शत्रुओंके आक्रमण भयसे देश मुक्त होगा। देशका और प्रजाका आधि-दैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक कल्याणका यह मार्ग है।

१६. प्रत्येक व्यक्तिको चाहिए, श्री भुवनेश्वरी माँकी आरस-संगमरमरकी या पंच धातुकी मूर्ति अथवा छविको और छपे हुए चिंतामणियंत्रको फ्रेममें मढ़ाकर रखें और हमेशा प्रातः सांयकाल धूप, दीप करके, इस परिचय-पुस्तिकामें छपी हुई स्तुति और आरती पढ़कर अपने कुटुंब, परिवारकी, धर्मकी, धर्मस्थानोंकी, लोगोंकी और अपने देशकी रक्षा करने की प्रार्थना करें। शक्तिके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जाति प्रत्येक ग्रामके प्रजाजनोंके साथ मिलकर प्रत्येक गाँवमें नवचंडी, शतचंडी, सहस्रचंडी, लघुरुद्र, महारुद्र, आदि यज्ञ यथाशक्ति करें। अपने गाँवमें अपने आश्रममें, पड़ोसमें रहनेवाले गरीब निराधारोंकी सहायता करें। मूखोंको भोजन, पशुओंको चारा, कुत्तोंको रोटी, पक्षियोंको दाना आदिसे रक्षण करें। जिस देशका वह निवासी है, जो देश अपना पोषण करता है उसके लिए वफादार रहकर देशकी रक्षाके प्रत्येक कार्यमें शुभ भावना रखें, देशको हानि पहुँचे ऐसा कार्य न करें। देशद्रोहिओंसे दूर रहे।

प्रत्येक मनुष्य प्रातःकाल या सायंकाल स्नान कर हाथमें पानी लेकर तिथि वारका उच्चारण कर अपने-अपने कुटुंब परिवारका देशका रक्षण करनेका संकल्प कर हमेशा अवकाश के समय नीचे लिखी हुई भुवनेश्वरी गायत्रीकी एक माला जप करे।

ॐ ह्रीं ह्रल्लेखायै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥१॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
No.....
BANARAS.

11/93

PRESENTED

श्री भुवनेश्वरी-पीठकी स्थापना

पीठाम्नायका सारांश

१. पांडवोंके बड़ेभाई धर्मराज युधिष्ठिरने इन्द्रप्रस्थान वर्तमान आग्रामें राजसूयमहायज्ञके साथ लक्षचंडी महायज्ञ किया था। पीछे आजसे २३१० साल पहिले विजयनगरसे आधा कोस दूर हेमकूट पर्वतकी उपत्यकामें तुंगभद्रा नदीके तीरपर हम्पीमें श्री विरूपाक्षेश्वर महादेवके मंदिरमें शृंगेरीमठके श्री शंकराचार्य विद्यारण्य स्वामीने उस समयके राजकर्ताके हाथसे लक्षचंडी महायज्ञ कराकर की भुवनेश्वरी देवीकी प्रतिष्ठा की और पीठस्थान स्थापित किया था। भगवतीके सांनिध्यमें चारों वेदका भाष्य किया जो अपने पूर्वाश्रमके भाई सायणके नाम पर प्रचलित हुआ। यह सायण-भाष्यके नामसे प्रसिद्ध है। भुवनेश्वरीके प्रभावसे विजयानगरम् साम्राज्यकी स्थापना और सनातन वेद धर्मका उद्धार हुआ। इस प्रकार सारे भारतमें वह श्री भुवनेश्वरी पीठ शताब्दियों तक रहा और समय के परिवर्तनसे प्रायः ५०० वर्षके पीछे उस पीठस्थानका अस्त हुआ और साथ ही विजयनगर साम्राज्यका भी अस्त हुआ। भारतखंडमें कलियुगके प्रभाव तथा अधर्म फैलनेसे अनेक राज्य परिवर्तन हुए, ७०० साल तक हिन्दुस्थानमें बाहरके मुसलमानोंका राज्य रहा, पीछे अंग्रेजी शासनके नीचे १५० वर्ष देश पराधीन रहा।

२. देशमें धर्मकी स्थापना और अपना पीठस्थान पुनः स्थापित करनेकी भूमिका तैयार करनेके लिये गोंडल महाराणीश्री नंदकुंवरबाको संवत् १९६८ में स्वप्नावस्थामें श्री भुवनेश्वरी माँकी आज्ञा हुई कि लक्षचंडी महायज्ञ करो, मैं ४० सालके पीछे गोंडलमें आना चाहती हूँ। महाराणी साहबको यह भ्रम लगा। राज्यकी कुलदेवी आशापुरा माता थीं। श्री भुवनेश्वरीका नाम देवीभागवतमें उन्होंने पढ़ा था, लेकिन भारतखंडमें भुवनेश्वरी मंदिर या पीठके संबंधमें उन्हें कुछ ज्ञात नहीं था। उन्होंने स्वप्नको महत्व नहीं दिया और थोड़े दिनके पीछे गोंडल महाराजा श्री भगवत सिंहजी साहबको माँने स्वप्नमें आज्ञा दी कि तुम महाराणीके हाथसे लक्षचंड़ी यज्ञ करवाओ। भारतखंडके उदयका यश तुमको मिलेगा। मेरे भक्तका तप पूर्ण होनेसे ४० सालके पीछे गोंडल आऊँगी। महाराजा और महाराणीने परस्पर विचार कर माँकी आज्ञासे लक्षचंडी यज्ञ करनेका निर्णय किया। विक्रम संवत् १९५९ में वैद्य कानजीभाई मंत्रशास्त्री के प्रधान आचार्य पदसे लाखों रुपयाके खर्चकर लक्षचंडी महायज्ञ किया गया। सारे भारतखंडके गण्यमान् विद्वानों-पंडितोंकी उपस्थितिमें तीन महीने तक यज्ञकार्य चलता रहा। अनेक राजा महाराजा, राजकुटुंब-वर्ग, हजारों अग्रगण्य व्यक्ति और लाखों प्रजाजनोंने दर्शन किया। हमेशा हजारों मनुष्योंका भोजन चलता था। प्रत्येक व्यक्तिको एक-एक रुपया दक्षिणाके साथ हजारों ब्राह्मणोंका भोजन नित्य होता था। इस प्रकार भुवनेश्वरी माँके गोंडलमें पधारनेकी भूमिका प्रस्तुत हुई। सारा भारतवर्ष पवित्र हुआ और इसी पुण्यप्रभावसे ४० सालके पीछे विदेशी शासनसे देश मुक्त होकर स्वतंत्र बना। इस महायज्ञमें वैद्यराज ऋत्विज् थे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

३. गोंडलसे आठ कोस दूर मेवासा नामक छोटे गाँवमें वैद्यराज जीवराम कालीदास शास्त्री का जन्म हुआ था। उनके पिता व्यास कालीदास यजमान-वृत्ति और कर्मकांडसे आजीविका चलाते थे। उनका वत्स गोत्र पाँच प्रवर सामवेद था। उनके पूर्वज कच्छसे, रावल जामके साथ उनके पुरोहित, राजवैद्य तथा कर्मकांडी विद्वान् के नाते काठियावाड़में आये और विक्रम संवत् १५९५ के वर्षमें नवानगर (जामनगर) के रावल जामके हाथसे शिलारोपण करवाया था। व्यास कालीदासके यहाँ एक तपस्वी संयासी माता श्री अमृतबाई को मिले, उनके आशीर्वादसे संवत् १६३८ माघ शुक्ल ८संतपंचमीको वैद्यराजका जन्म हुआ। आठ वर्षकी छोटी उम्रमें माता-पिताका देहान्त हो गया। गोंडलमें काकाके यहाँ रह कर भिक्षावृत्ति कर शास्त्री केवलराम लीलाधरके पास संस्कृत का अभ्यास किया। १८ वर्षकी उम्रमें शास्त्री बने। छोटी उम्रमें काकाने लग्न कर दिया और कुटुम्ब पोषणका भार सिरपर आया। शास्त्री बनने पर भी आकाशवृत्ति ही भाग्यमें बदी थी।

४. संवत्१९६२ में गिरनार पर वैद्यराजकी श्रीअच्युत स्वामीसे भेंट हुई। उनके साथ कालिकाकी गुफामें ९ मास तक रहे। स्वामीजीने उनका पूर्णाभिषेक कर उन्हें श्री भुवनेश्वरीकी दीक्षा दी स्वामीजीकी आज्ञानुसार भविष्यके व्यवसायके साथ धारणा, ध्यान, प्राणायाम, प्रत्याहार आदि अष्टांग योगसे गृहस्थाश्रम में रहकर भुवनेश्वरी माँकी तपश्चर्या की। स्वामीजीने कहा था कि आजसे ४२ वर्षके बाद तुम्हारा तप पूर्ण होनेपर लक्षचंडी यज्ञसे पवित्र हुई गोंडलकी भूमिमें श्रीभुवनेश्वरी का धाम और पी स्थानकी स्थापना तुमारे हाथ से होगी, इत्यादि।

५. स्वामीजीके सहयोगसे ज्ञात हुआ कि उनकी उम्र करीब १३५ से १४० वर्षकी थी लेकिन योगबलसे वे २०–२२ सालके किशोर जैसे दिखाई देते थे। वह सब शास्त्रोंके ज्ञानसे पूर्ण थे। वे संस्कृत, हिन्दी-गुजराती सब भाषाओंमें बातचीत और शास्त्रीय चर्चा करते थे। गिरनार पर अंबाजीके मंदिरमें बंगाली, मद्रासी आदि यात्री आते थे जब उनसे स्वामीजीकी भेंट हो जाती थी तब वह उनके साथ बंगाली, तैलुगू, अंग्रेजी आदि भाषामें बात-चीत करते थे। उनके सान्निध्यमें वैद्यराजको अनुभव हुआ कि स्वामीजीको भाषाका भेदभाव नहीं था। स्वामीजी रसायनशास्त्र, आयुर्वेद, धातुवादके पूर्ण विद्वान् और योगसिद्ध थे। उनके सान्निध्यमें कई चमत्कारिक घटनाका भी अनुभव वैद्यराजको हुआ। स्वामीजीकी भेंटके पहिले वह शास्त्री थे और संस्कृत के पंडित थे। स्वामीजीने दीक्षाके बाद उन्हें आयुर्वेद और रसायनशास्त्रका अभ्यास कराया। ९ मासके परिचयमें भविष्यके १०० वर्ष तककी हिन्दुस्थानकी और विश्वकी कई घटनायें साथ ही वैद्यराजकी जीवन-यात्राके संबंधमें कई बातें बतलाईं, जो भविष्यसे सत्य सिद्ध हुई, आगेकी भी सभी बातें सत्य होनेका विश्वास है। नव मासके बाद स्वामीजीसे विदा ली।

६. बादमें शास्त्रीके अतिरिक्त वह वैद्य बने और बम्बई गये। वहाँ वैद्यराज बाबाभाई अचलजी औषधालयमें रहकर श्री शिवजीभाई के साथ आयुर्वेदका पठन-पाठन आगे बढ़ाया और क्रिया-कुशलता भी प्राप्त की। रसवैद्य बालाशंकरभाई मार्गदर्शन करते थे। बादमें वैद्यराजने बंबईमें गुलालवाडीमें अपना स्वतंत्र औषधालय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खोला। संवत् १९६४ में श्री वेंकटेश्वर प्रेसवाले सेठ खेमराज श्री कृष्णदासजीकी इच्छासे रसायनशास्त्रके महान् ग्रन्थ 'रसरत्नसमुच्चय' का मूल-सहित गुजराती भाषानुवाद ८०० पृष्ठका बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित किया। इसकी समर्पण-पत्रिका वैद्यराज बाबाभाई अचलजी को दी।

७. बंबई निवासके समयमें रावबहादुर वसनजी खीमजी और उनके मित्र रावसाहब पुरुषोत्तम ओघव जीसे स्नेह-संबंध हुआ। रावबहादुरके दादरके बंगलेमें रहकर कई शास्त्रीय सिद्ध औषध बनानेका कार्य प्रारंभ किया। सेठ-जीने आयुर्वेदिक ओषधियोंकी उपयोगिता, प्रभाव और वैद्यराजका आयुर्वेदका ज्ञान विद्वत्ता देखकर बंबईमें उस समयके अग्रगण्य वैद्योंकी छोटी सभा करके पाँच लाख रुपयेके पूंजीसे रसशालाकी स्थापना करनेका निर्णय किया। इस काममें वैद्यराज बालाशंकर बाबाभाई, वैद्यराज प्रभुराम जीवणराम, वैद्यराज शंकरदाजी शास्त्री पदे आदिने सहायता देना स्वीकार किया। बंबईके बड़े मंदिरवाले गोस्वामी श्री गोकुलनाथजीके पिता गोस्वामी श्री दामोदरलालजी महाराज चापासनीवाले, गो० श्री देवकीनंदजी महाराज, गो० श्री घनश्याम लालजी, गो० श्री पुरुषोत्तमलालजी अमरेलीवाले, और द्वारकाके श्रीशंकराचार्य आदिने अपने भक्तोंको रसशालाकी सर्व प्रकारकीसहायता करनेका आदेश दिया। इस कार्यमें रायबहादुर वसनजी खीमजी, रा० ब० पुरुषोत्तम ओघवजी, सेठ श्री देवकरण नानाजी, सेठ श्री चतुर्भुज मोरारजी आदिने भी यथाशक्ति सहायता देनेका वचन दिया और एक मासमें पाँच लाख रुपयेकी पूंजी कागज पर चढ़ गयी। दैवकी गति गहन है, मनुष्य सोचता है कुछ दैव करता है और। वैद्यराजको अर्शरोगका उपद्रव हुआ और स्नेही मित्रोंकी सलाहसे वह अपनी जन्मभूमि मेवासा काठियावाड़ आगये और हमेशाके लिये बंबई छोड़ दिया। संवत् १९६६, ई० सन् १९१० में वहाँ रसशाला औषधाश्रमकी स्थापना माघ शुक्ल पंचमीको की गई। इन सब घटनाओंके बारेमें श्री अच्युत स्वामीका वचन सत्य सिद्ध हुआ। संवत् १९६८ के भाद्रपद शुक्ल ११ को रसशालाको गोंडलमें लाये और आयुर्वेदके व्यापारके साथ "आयुर्वेद रहस्य" नामक मासिक पत्र का भी प्रकाशन प्रारंभ किया जो सन् १९१२ से १९६४ ईस्वी तक चलता रहा।

८. इस समय दक्षिण आफ्रिकामें गाँधीजी के सत्याग्रहका आन्दोलन चल रहा था। उस ससय गाँधीजीने वर्त-मानपत्रों द्वारा आर्थिक सहायता करने की देशसे अपील की। गोंडल महाराजाको भी गाँधीजीने लिखा था। गोंडलके महाराजा भगवतसिंहजीने पैंतीस हजार रुपया गाँधीजीके पास भेजा था। इसमें वैद्यराजकी प्रेरणा भी थी। अफ्रिकाका आन्दोलन समाप्त हुसा और गाँधीजी सन् १९१५ में स्वदेश आये, वह पहिले ही गोंडल महाराजाका उपकार माननेके लिये ता० २४-१-१९१५ को गोंडल आये। इस प्रसंगमें रसशाला औषधाश्रमकी ओरसे वैद्यराजने ता० २७ जनवरी १९१५ के दिन गाँधीजीको मानपत्रके साथ "महात्मा" की पदवी प्रदान की। उस सभामें गोंडलके महाराजा भगवतसिंहजी, अन्य अधिकारी वर्ग और हजारों प्रजाजन उपस्थित थे। उत्तरमें गाँधीजीने वैद्यराज-की प्रशंसा करते हुए आयुर्वेद के लिए उत्तम शब्द कहे थे, जो मानपत्रकी लाखों पुस्तिकाओंमें प्रचारित किया गया, यह हमारी प्रजातंत्र सरकार और तंत्रवाहकों को ध्यान देने योग्य है। उस मानपत्र-समारंभमें महात्मा गाँधीजी, श्री कस्तूरबा, उनके कुटुंब-परिवार और अधिकारी वर्गके साथ लिया गया एक आईल पेंटिंग चित्र

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सन् १९६१ के अप्रैलमें दिल्ली पार्लियामेन्टमें एक मास रखा गया था। प्रत्येक सदस्यने उसका दर्शन किया और बादमें माननीय श्री राष्ट्रपतिजीके हाथसे गाँधी मेमोरियल हालमें वह लगाया गया।

९. सन् १९१६ ई० २४ वीं अक्टोवर को महाराजा भगवतसिंहजीने अपने जन्म दिनके उत्सवके उपलक्षमें वैद्यराजकी विद्वत्ता, देश विदेशमें उनकी प्रसिद्धि, रसशाला द्वारा प्रजाकी सेवा आदि देखकर गोंडल राज्यके "राजवैद्य" होने की घोषणकी। गोंडल महाराज स्वयं एम० डी०, एफ० आर० सी० एस० डाक्टर थे और वैद्यराज बाबाभाई अचलजीके सहयोगसे आयुर्वेदमें भी निपुणता प्राप्त कर ली थी। इसके परिणामस्वरूप महाराजा आयुर्वेदका बहुमूल्य ग्रन्थ अंग्रेजीमें "ए शार्ट हिस्टरी आफ आर्यन मेडीकल सायन्स" नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया था, उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा संसारके विद्वानों और वर्तमान पत्रोंने की थी।

१०. इस प्रकार अच्युत स्वामीके वैद्यराजके लिये कहे हुए कई संकेत सच्चे होते रहे। स्वामीजीने यह भी संकेत दिया था कि लक्षचंडी महायज्ञसे पवित्र गोंडल भूमिमें ४० सालके बाद भुवनेश्वरीकी प्रतिष्ठा और पीठस्थानकी स्थापना होगी और दूसरेही वर्ष भारतखंडमें विदेशी शासनका अस्त होगा, वह बात सत्यसिद्ध हुई। यह बात वैद्यराजने व्यास-पंचांगमें और महात्माजी जैसे अग्रगण्य महापुरुष और राजा महाराजाओंसे कही थी। जिनमें कई आज विद्यमान हैं।

११. संवत् १९९४ में माताजीकी आज्ञा हुई कि गोंडलमें मंदिर बनवाकर प्रतिष्ठा करो। दक्षिण हिन्दमें पीठस्थानका अस्त होनेके बाद हम भरतखंडमें नहीं रहते। लक्षचंडी यज्ञसे पवित्र गोंडल-क्षेत्रमें हम आना चाहती हैं। इस प्रकारका संकेत मिलनेसे राजवैद्यजीने जयपुरसे सफेद संगमरमर (आरस) की युवती स्त्रीके पूर्ण विकसित अंग-शरीर जैसी बड़ी मूर्ति बनवाकर मंगवाई और रसशालाके कंपाउण्डमें शिखरबंध बड़ा मंदिर बनवाया। संवत् २००२, ई० सन् १९४६ वैशाख मासमें सैंकडों विद्वाव् ब्राह्मणोंके नेतृत्वमें विधिवत् प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्ण किया गया। जिसमें ८ दिन तक प्रतिदिन पाँच-पाँच हजार ब्राह्मण और अन्य लोग भोजन करते थे। प्रतिष्ठा-महोत्सव पूर्ण हुआ और दूसरे ही वर्ष माँकी आज्ञासे राजवैद्यजीने श्री अच्युत स्वामीजीके आदेशानुसार आश्रम-परिवर्तन कर वानप्रस्थाश्रम ग्रहण किया। प्रतिष्ठाके बाद दूसरे ही वर्ष भरतखंडमें विदेशी शासनका अन्त हुआ और देश स्वतंत्र होनेका स्वामीजीका वचन सत्य सिद्ध हुआ। राजवैद्यने विद्वान् वेदपुरुषों द्वारा किये हुए महायज्ञ और महोत्सव के साथ ही शास्त्रीय विधिपूर्वक आश्रमपरिवर्तन किया साथ ही श्री भुवनेश्वरी पीठका आचार्य पदका पट्टाभिषेक हुआ और "अखंड भूमंडलाचार्य अनंतश्री विभूषित भुवनेश्वरी पीठाधीश जगद्गुरु रसेशाचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज" इस नामसे उन्होंने आचार्यपद ग्रहण किया।

१२. श्री अच्युत स्वामीजीका आदेश था कि वानप्रस्थाश्रममें रहकर पाठपूजा, भजन-कीर्तनमें आयुष्य न बिता-कर वेद-वेदांग, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, तंत्र, ज्योतिष, काव्य, आदि, शास्त्रोंका पठन-पाठन, संशोधन, प्रकाशन कर जनताके लिये धर्म, अर्थ, काम मोक्षके मार्ग बतानेका व्यवसाय आजीवन चालू रखना। गुरुकी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आज्ञाको शिरोधार्य करके आचार्य जीने अपना संपूर्ण आयुष्य शास्त्रों, धर्मस्थानों और प्रजाकी सेवामें व्यतीत करनेका निश्चय किया और आज भी वह अपना जीवन वैसा ही व्यतीत कर रहे हैं। स्वामीजीके आदेशानुसार पीठाम्नाय बनाया। श्री पीठके उत्तराधिकारी आचार्यको गृहस्थाश्रममें रह कर पीठाम्नाय के अनुसार कार्य करनेकी आज्ञा है।

इस श्री पीठके सब प्रकारके व्यवहारमें श्री पीठकी स्थापना करनेवाले आद्य आचार्य और उनके उत्तराधिकारी भविष्यके आचार्य श्री पीठका व्यवहार चलानेमें स्वतंत्र हैं। आचार्यकी आज्ञाके अनुसार उनके अनुयायी और श्री पीठके भक्तोंको श्री पीठके नियमानुसार आचार, विचार, बरतनेकी आज्ञा है। श्रीपीठकी व्यवस्थामें किसी भी व्यक्ति या समष्टिको हस्तक्षेप करनेका अधिकार नहीं है।

स्वामीजीने संवत् १९६२ में देशका, विश्वका, भुवनेश्वरी पीठका और उसके आद्य आचार्य आदिका जो भविष्य कहा था उसका विस्तृत विवरण आचार्य श्री के जीवन-चरित्रमें प्रकट होगा।

१४. आचार्यने वानप्रस्थाश्रममें रहकर आज तक अनेक शास्त्रीय ग्रन्थोंका संशोधन कर प्रजाकी सेवामें समर्पित किया है और विविध शास्त्रोंके प्रायः१६५ छोटे-बड़े ग्रन्थ आजतक प्रकाशित किये हैं। सब शास्त्रीय संशोधन आचार्यश्रीने अपने हाथोंसे ही किया है और कर रहे हैं। परंतु अब ८९ वर्षकी वृद्धावस्थाके कारण उनको विद्वान् सहायककी आवश्यकता है, ऐसा उनके पास रहनेवालोंको लगता है। कई संशोधित ग्रन्थ तैयार किये गये हैं जो आर्थिक अनुकूलता होनेसे प्रकट होते रहेंगे।

१५. स्वामीजी कहते थे कि भरतखंड धर्मभूमि और कर्मभूमि है, कलिकालके प्रभावसे इस भूमिमें वेदधर्मका और वैदिककर्मोंका प्रतिदिन ह्रास हो रहा है, इसके परिणामस्वरूप प्रतिदिन प्रजा विविध कष्टोंको भोग रही हैं। विश्वमें भी जनपदोद्ध्वंसकारक वातावरण फैलना स्वाभाविक है। विविध रोगोंमें प्रताड़ित प्रजा अल्पायुषी बनेगी। जड़वाद, स्वार्थ, स्थान स्थानमें युद्ध, दुष्काल, अग्निप्रकोप आदि उपद्रवोंसे प्रजा मरेगी। इन संकटोंमें प्रजाकी रक्षा धर्म ही कर सकता है। प्रजाको धार्मिक भावनामें प्रवृत्त करनेका कार्य आचार्यश्री कर रहे हैं। स्वामीजीका दिया हुआ आशीर्वाद चरितार्थ हो रहा है।

१६. श्री भुवनेश्वरी पीठकी धार्मिक प्रणाली वेदविहित हैं। श्रुति, स्मृति, वेद, उपनिषद्, धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास, वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि शास्त्र आधारभूत हैं। श्री आदि शंकराचार्य महाराजके गुरु भगवत पूज्यपाद गोविंदाचार्य और उनके गुरु श्री गौड़पादाचार्यकी प्रणालीको ध्यानमें रखकर श्री भुवनेश्वरी पीठका व्यवहार चल रहा है। इस परंपरामें वाल्मीकि, अत्रि, अगत्स्य, भृगु, व्यास, मांडव्य, रत्नघोष, व्याडि, नागार्जुन, नागबोधि, काकचंडी, भालुकी, मैथिली, श्री गोविन्दभगवतपूज्यपाद, गोरक्षनाथ, पार्वतीपुत्र नित्यनाथ सिद्ध आदि ऋषिमुनि आचार्यों द्वारा निर्णीत की हुई सनातन वेद धर्मकी प्रणालीके अनुसार शिखा-सूत्र (यज्ञोपवीत)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सप्त कच्छके साथ, संध्या वैश्वदेवादि नित्य नैमित्तिक श्रुति, स्मृति, धर्मशास्त्र प्रतिपादित धार्मिक कार्य करनेका नियम है। पंचायतन देवोंके पूजनमें मुख्य देवता श्री भुवनेश्वरी हैं। श्री पीठके अनुयायी भक्तोंका सनातन वेदधर्मका पालन-रक्षण-पोषण करनेका और अन्योंकी रुचि इसमें प्रवृत्त करना कर्तव्य है। श्री भुवनेश्वरी माँकी और जगद्गुरु आचार्यश्री की यह आज्ञा है कि माँ के भक्तजन इसका पालन करें।

पृथ्वी, स्वर्ग, पातालकी माता श्री भुवनेश्वरी माँकी आज्ञा है कि अपने पड़ोसमें, गाँवमें, देश-विदेशमें रहनेवाले माँके भक्त भाइओं, बहिनों, बटुकोंको चाहिए कि वहे एक दूसरेके सहायक बने और माँकी भक्तिका प्रचार करें, अन्योंको भक्त बनाकर उनको कल्याणका मार्ग बतायें। अपना, अपने परिवारका अपने गाँवका, अपने देशका और विश्वका कल्याण करनेकी प्रार्थना करते रहें। यही जीवन-यात्राकी सफलता है। ॐ तत्सत्।

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महर्षि वेदव्यास-रचित

॥ श्रीभुवनेश्वरी-स्तुतिः ॥

आर्यास्तुतिं प्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा ।
नारायणीं नमस्यामि देवीं श्रीभुवनेश्वरीम् ॥१॥

त्वं हि सिद्धिर्धृतिः कीर्तिः श्रीर्विद्या सन्नतिर्मतिः ।
संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा कालरात्रिस्तथैव च ॥२॥

आर्या कात्यायनी देवी कौशिकी ब्रह्मचारिणी ।
जननी सिद्धसेनस्य उग्रचारी महाबला ॥३॥

जया च विजया चैव पुष्टिस्तुष्टिः क्षमा दया ।
ज्येष्ठा यमस्य भगिनी रक्तमालाम्बरावृता ॥४॥

बहुरूपा विरूपा च अनेकवेशधारिणी ।
विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी ॥५॥

पर्वताग्रेषु घोरेषु नदीषु च गुहासु च ।
वासस्ते च महादेवि वनेषूपवनेषु च ॥६॥

शबरैर्बर्बरैश्चैव पुलिन्दैश्च सुपूजिता ।
मयूरपिच्छध्वजिनी लोकान्क्रमसि सर्वदा ॥७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुक्कुटैश्छागलैर्मेषैस्सिंहैर्व्याघ्रैस्समाकुला ।
घण्टानिनादबहुला विन्ध्यवासिन्यभिश्रुता ॥८॥

त्रिशूलपट्टिशधरा सूर्यचन्द्रपताकिनी ।
नवमी कृष्णपक्षस्य शुक्लस्यैकादशी तथा ॥९॥

भगिनी बलदेवस्य रजनी कलहप्रिया ।
आवासः सर्वभूतानां निष्ठा च परमा गतिः ॥१०॥

नन्दभूपसुता चैव देवानां विजयावहा ।
चीरवासा सुवासाश्च रौद्री संध्याचरी निशा ॥११॥

प्रकीर्णकेशी मृत्युश्च सुरामांसबलिप्रिया ।
लक्ष्मीरलक्ष्मीरूपेण दानवानां वधाय च ॥१२॥

सावित्री चापि देवानां माता मन्त्रगणस्य च ।
कन्यानां ब्रह्मचर्यं त्वं सौभाग्यं प्रमदासु च ॥१३॥

अन्तर्वेदी च यज्ञानामृत्विजां चैव दक्षिणा ।
कर्षकाणां च सीतेति भूतानां धरणीति च ॥१४॥

सिद्धिः सांयात्रिकाणां तु वेला त्वं सागरस्य च ।
यक्षाणां प्रथमा यक्षी नागानां सुरसेति च ॥१५॥

ब्रह्मावादिन्यथो दीक्षा शोभा च परमा तथा ।
ज्योतिषां त्वं प्रभा देवी नक्षत्राणां च रोहिणी ॥१६॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजद्वारेषु तीर्थेषु नदीनां सङ्गमेषु च ।
पूर्णा च पूर्णिमा चन्द्रे कृत्तिवासा इति स्मृता ॥१७॥

सरस्वती च वाल्मीके स्मृतिर्द्वैपायने तथा ।
ऋषीणां धर्मबुद्धिस्त्वं देवानां मानसी तथा ॥१८॥

वेदानां कर्त्री शास्त्राणां शंकरार्धाङ्गना शिवा ।
सुरा देवी तु भूतेषु स्तूयसे त्वं स्वकर्मभिः ॥१९॥

इन्द्रस्य चारुदृष्टिस्त्वं सहस्रनयनेति च ।
तापसानां च देवी त्वमरणिश्चाग्निहोत्रिणाम् ॥२०॥

क्षुधा च सर्वभूतानां तृप्तिस्त्वं दैवतेषु च ।
स्वाहा स्वधा धृतिर्मेधा वसूनां त्वं वसूवती ॥२१॥

आशा त्वं मानुषाणां च पुष्टिश्च कृतकर्मणां ।
दिशश्च विदिशश्चैव तथा अग्निशिखा प्रभा ॥२२॥

शकुनी पूतना त्वं च रेवती च सुदारुणा ।
निद्राऽसि सर्वभूतानां मोहिनी क्षत्रिया तथा ॥२३॥

विद्यानां ब्रह्मविद्या त्वमोंकारोऽथ वषट् तथा ।
नारीणां पार्वती च त्वां पौराणीमृषयो विदुः ॥२४॥

अरुन्धती च साध्वीनां प्रजापतिवधो यथा ।
यथार्थनामभिर्दिव्यैरिन्द्राणी चेति विश्रुता ॥२५॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रसौ रसायनेषु त्वं जरामृत्युहरी परा ।
त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२६॥

संग्रामेषु च सर्वेषु अग्निप्रज्वलितेषु च ।
नदीवगेषु चौरेषु कान्तारेषु भयेषु च ॥२७॥

प्रवासे राजबन्धे च शत्रूणां च प्रमर्दने ।
प्राणात्ययेषु सर्वेषु त्वं हि रक्षा न संशयः ॥२८॥

त्वयि मे हृदयं देवि त्वयि चित्तं मनस्त्वयि ।
रक्ष नां सर्वदुःखेभ्यः प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥२९॥

इमां यत्स्तुतिं दिव्यामिति व्यासेन निर्मितां ।
प्रातः सायं पठेद्यस्तु सुधी प्रयतमानसः ॥३०॥

त्रिभिर्मासैःकांक्षितं च फलं वै संप्रयच्छसि ।
षड्भिर्मासैर्वरिष्ठं तु वरमेकं प्रयच्छसि ॥३१॥

अर्चिता नवभिर्मासैर्दिव्यं चक्षुः प्रयच्छसि ।
संवत्सरेण सिद्धिं तु यथाकामं प्रयच्छसि ॥३२॥

सत्यं ब्रह्म च दिव्यं च द्वैपायनवचो यथा ।
नृणां बन्धं वधं घोरं पुत्रनाशं धनक्षयम् ॥३३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

व्यार्धिमृत्युभयं चैव पूजिता शमयिष्यसि ।
भविष्यसि महानागे वरदा कामरूपिणी ॥३४॥

यश्चैतत्पठते स्तोत्रं शृणुयात् कामिनी वटुः ।
सर्वार्थसिद्धिं लभते मानवो नात्र संशयः ॥३५॥

॥ इति श्रीव्यासमहर्षि प्रणीता श्रीभुवनेश्वरी स्तुतिः संपूर्णा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ राजराजेश्वरी श्रीभुवनेश्वरी--स्तुति ॥

आर्या श्रीभुवनेश्वरी माँकी मेरी यह स्तुति माँ स्वीकार करें जो पहिले ऋषिओंने कही है। स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताल तीनों लोकोंकी नियामिका नारायणी श्रीभुवनेश्वरीको मेरा प्रणाम है। हे देवि सिद्धि, धृति, कीर्ति श्री, विद्या, सन्नति, नति, संध्या, रात्रि, प्रभा, निद्रा, कालरात्रि, आर्या और कात्यायनी देवी तुम हो। कौशिकी, ब्रह्मचारिणी, कार्तिक स्वामीकी माता, उग्रचारी, महाबला, जया, विजया, पुष्टि, तुष्टि, क्षमा दया और यमराजाकी बड़ी बहन तुम हो। तुम लाल और आकाशरंगी कौशेय वस्त्र पहिनती हो। तुम बहुत रूप धारण करती हो। बुद्धिमें न आने वाले तुम्हारे अनेक स्वरूप हैं। अनेक यज्ञ यागादि विधिमें तुम रहती हो। विरूपाक्षी, विशालाक्षी तुम हो। भक्तोंका रक्षण करती हो। भयंकर पर्वतोंमें, नदियोंमें, गुफाओंमें, वन, अरण्य, उपवनोंमें हे महादेवि तुम निवास करती हो। शबर बर्बर, पुलिंद आदि अनार्य लोग भी तुम्हें पूजते हैं, तुम्हारी ध्वजा मयूर पिच्छकी है। तुम विश्वमें सब जगह फिरती हो। कुक्कुट, मेंढ़, सिंह, व्याघ्र आदिसे तुम घिरी हुई हो। घंटाके नादसे तुम्हारा स्थान गूंज रहा है। तुम विन्ध्यवासिनी कही जाती हो। त्रिशूल पट्टिश तुम्हारे शस्त्र हैं। सूर्य और चन्द्र तुम्हारी ध्वजामें हैं। कृष्णपक्षकी नवमी और शुक्लपक्षकी एकादशी तुम हो। बलभद्रकी बहिन रात्रिस्वरूप कलहनाशिनी तुम हो। सब प्राणिमात्रमें तुम्हारा निवास है। निष्ठा, एकाग्रता और परमगति रूप तुम हो, जो कृष्णके पिता वसुदेव, उनके छोटे भाई यशोदाके पति नंद राजा उसकी पुत्री, देवताओंको विजय दिलानेवाली, सुनहरा रेशमी वस्त्र पहननेवाली तुम हो। रुद्ररूपमें दुष्टोंको दण्ड देनेवाली, संध्याके समय जगत् में पर्यटन कर भक्तोंका रक्षण करनेवाली रात्रिरूप तुम हो। मुक्त केशवाली मृत्युरूप, गायत्रीरूप लक्ष्मी स्वरूप तुम हो और निर्वनता अलक्ष्मी भी तुम्हारा स्वरूप है। कुमारी कन्याओंका ब्रह्मचर्य और परिणीता ब्याही हुई स्त्रियोंका सौभाग्य तुम हो। यज्ञमें अन्तर्वेदीरूप, यज्ञके ऋत्विजों की दक्षिणारूप, कृषि करनेवालों के लिये सीतारूप हलरूप, प्राणीमात्रको धारण करनेवाली पृथ्वीरूप, नौका और विमान मार्गसे जानेवालोंको सफलता देनेवाली सिद्धिरूप, समुद्रकी वेलारूप, यक्षोंकी मुख्य मातारूप और नागोंकी सुरसा देवी तुम हो, तुम ब्रह्मवादिनी दीक्षारूप और श्रेष्ठ शोमारूप हो। आकाशके ताराओंमें, तेजस्वी वस्तुओंमें, और मनुष्योंमें तुम प्रभा हो। नक्षत्रोंमें तुम रोहिणी हो। राजद्वारोंमें, तीर्थोंमें, नदियोंके संगमोंमें तुम निवास करती हो। चन्द्रमें पूर्णिमा रूप तुम हो। कृत्तिवासा कोपीनधारी शंकर स्वरूप तुम हो। वाल्मीकि ऋषिमें सरस्वती रूपसे, द्वैपायन व्यासमें स्मृति स्मरणशक्ति रूपसे, ऋषियोंमें धर्मबुद्धि रूपसे, देवताओंमें मानस रूपसे, शंकरकी अर्धांगनी रूपसे, वेद और शास्त्रोंको बनानेवाली शिव स्वरूपसे, प्राणिमात्रमें देवता रूपसे तुम रहती हो। भिन्न-भिन्न विधियोंसे तुम्हारी स्तुतिकी जाती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन्द्रकी हजार नेत्रवाली सुन्दर सर्वव्यापी दृष्टि स्वरूप तुम हो। तपस्विओंकी इष्टदेवता, अग्निहोत्रिओंकी अरणीं, प्राणिमात्रकी क्षुधा-भूखरूप, दैवतरूप, जीवन धारण करनेवालोंकी तृप्तिरूप, स्वाहा, स्वधा, धृति, मेधा और वसुदेवताओंकी वसुमती तुमहो। मनुष्योंमें आशास्वरूपसे और कर्म करनेवालों में पुष्टि स्वरूपसे तुम रही हो। दिशा, विदिशा अग्निशिखा और प्रतिमारूप तुम हो। शकुनी, पूतना, रेवती आदि बालग्रहरूप, प्राणिमात्रकी निद्रा, मोहिनी, माया ममतारूप तुम हो। प्रजाका रक्षण करनेवाली क्षत्रिय जातिके रूपसे, विद्याओंमें ब्रह्मविद्या रूपसे, ओंकार और वषट् रूपसे और स्त्रियों में पुरातन कालकी-सृष्टि के प्रारंभसे पार्वती स्वरूपसे तुमको ऋषिलोग पूजते हैं। तुम साध्वी स्त्रियों में अरुन्धती रूप हो ऐसा प्रजापति कहते हैं। जलवृष्टि कर प्रजाको जीवित रखनेवाली इन्द्रकी पत्नी इन्द्राणी भी तुम्हारा स्वरूप है। इस स्थावर जंगम जगत् में सभी स्थानोंमें, घटघटमें व्याप्त होकर तुम रहती हो। रसायनोंमें पारद स्वरूपमें रहकर वृद्धावस्था और मृत्युको मिटानेवाली पराशक्ति तुम हो। नदियोंके प्रवाहमें, चोरके भयमें, जंगल और भयंकर अरण्यों में, मरणतुल्य आपत्तियों में, मुसाफिरी में आयी हुई विपत्ति में, शत्रुओंके आक्रमण में और मरणभयरूप संकटों में स्मरण करनेसे तुम भक्तोंकी रक्षा करती हो। रक्षा तुम्हारा स्वरूप है। हे देवि ! मेरा हृदय तुममें है। अपना मन और बुद्धि तुममें रखता हूँ। मुझे सब दुःखोंसे, सब कष्टोंसे बचाओ और तुम मुझ पर प्रसन्न हो।

हे माँ, व्यास मुनिकी बनायी हुई इस तुम्हारी दिव्य स्तुतिका जो स्त्री, बालक या पुरुष प्रातःकाल और सायंकाल पवित्र हो कर मनको एकाग्र कर पाठ करेगा उसको तीन महीनोंमें मनवांछित फल तुम देती हो। छः महीनोंमें एक वरदान, नव महीनोंमें दिव्यचक्षु और एक साल पाठ करनेसे तुम सब अभिलाषायें पूर्ण करोगी ऐसा द्वैपायन व्यास महर्षिका ब्रह्मवाक्य सत्य वचन है।

हे श्री भुवनेश्वरी माँ, तुम्हें पूजनेवाले, तुम्हारी शरणमें आये हुए मनुष्यों के बंधन, वध, पुत्रनाश, धननाश, रोग, मृत्युका भय और सब कष्टोंको तुम मिटाती हो। तुम इच्छानुसार रूप, धन और सौभाग्य देनेवाली हो। हे माँ ! तुम अपने भक्त स्त्री-पुरुषोंको इच्छित वरदान देती हो। जो स्त्री, बटुक या पुरुष इस स्तुतिका पाठ करते और सुनते हैं उनकी सब प्रकारकी अभिलाषायें पूर्ण होती हैं। इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है।

॥ इति श्रीमहाभारते श्रीभुनेश्वरी स्तुतिः संपूर्णा ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री भुवनेश्वरी माँकी नित्य पूजाविधि

श्री भुवनेश्वरी माँकी नित्य पूजा करनेवालोंको स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन कर पूजा करनी चाहिए। माँके चित्र और छपे हुए चिन्तामणि यंत्रको फ्रेम में लगा कर पूजामें रखना चाहिए। यदि माँकी पंचधातुकी अथवा संगमरमरकी मूर्ति हो तो उसको स्नान कराना और चन्दन लगा कर फूल चढ़ाना चाहिए। अगरवत्तीका धूप और घृतका अथवा तेलका दीपक जलाना चाहिए। प्रसाद के लिये द्राक्षा, शक्कर अथवा कोई भी खानेकी चीज अर्पण करना उचित है।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

यह मंत्र पढ़ते हुए चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। पीछे भुवनेश्वरी स्तुति, नीराजन आरती और प्रवरातीर आरती पढ़ना चाहिए। इस प्रकार माताजीकी चित्रकी अथवा मूर्तिकी पूजा भाई कुमारिका, सौभाग्यवती और विधवा बहिनें प्रत्येक कर सकते हैं। अंतमें माँ की इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

"हे माँ, तुम हमारा और कुटुम्ब परिवारका कल्याण करो। हमारे रोग, दोष, क्लेश, भय, उच्चार और विघ्नका नाश करो। उद्योग-धंधा, रोजगार, नौकरी आदिसे हमको धनसमृद्धि प्राप्त हो और हम तुम्हारी सेवा करते हुए सुखमें जीवन व्यतीत करें। हमारे देशका, धर्मका, धर्मस्थानोंका, जनताका, दैवी, मानुषी आपत्तियोंका रक्षण करो।"

अवकाश हो तो दुर्गासप्तशती, लघुस्तव, श्रीसूक्त, भुवनेश्वरी स्तोत्र, सौन्दर्य लहरी आदिका पाठ करना चाहिए। भुवनेश्वरी गायत्रीकी और गुरुमंत्रकी एक माला करनी चाहिए। माला रुद्राक्षकी, प्रवालकी, चन्दनकी उपयोगमें लायी जा सकती है।

॥ भुवनेश्वरी गायत्री ॥

ॐ ह्रीं ह्रल्लेखायै विद्महे भुवनेश्वर्यै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥१॥

॥ गुरुमंत्र ॥

ॐ ऐं भुवनेश्वरी वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥२॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ श्री भुवनेश्वरी माँकी नीराजन आरती ॥

जय जय रोग हरो-मां, जय जय रोग हरो,
स्वीकारो आरतिको पूजा सफल करो, जय देवी जय देवी ॥१॥

जय जय धृतिषोड़शि मां जय सुंदरी श्यामा मां जय सुंदरी श्यामा,
जय विश्वेश्वर पत्नी, त्रिपुरेश्वरी वामा जय देवी जय देवी ॥२॥

जय बाला सुखकारिणि भवतारिणि तारा, मां भवतारिणि तारा,
जय भगवती भुवनेश्वरी, जय जय ओंकारा, जय देवी जय देवी ॥३॥

स्वेच्छासे दश विद्या, रूपें प्रगट भये, मां रूपें प्रगट भये,
वरद अभय हाथोंसे, भक्तके कष्ट गये, जय देवी जय देवी ॥४॥

जय गणपति शिव सहिता, जय पद्मा विजया, मां जय पद्मा विजया,
जय रविजा जय गिरिजा, तू परमेशि जया, जय देवी जय देवी ॥५॥

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, धारिणि तुं आशा, मां धारिणि तुं आशा,
तेरे शरणागतको, कहीं नहीं निराशा, जय देवी जय देवी ॥६॥

जय षट्चक्रनिवासिनि, कुंडलिनी रूपा, मां कुंडलिनी रूपा,
अर्ध स्त्री नट पत्नी, व्याप्तचित्त रूपा, जय देवी जय देवी ॥७॥

सकल स्त्रियोंके बीच तुं है उत्तम रूपा, मां है उत्तम रूपा,
जय परिताप निवारिणि, तुं मोहिनी रूपा, जय देवी जय देवी ॥८॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर त्रिगुणोंसे तो भी, उनमें है बसती, मां उनमें है बसती,
हरती दुःख कष्टोंको, भक्त हृदय बसती, जय देवी जय देवी ॥९॥

जय आगम निगमों में, तेरा गुण गाया, मां तेरा गुण गाया,
अमर की हि जप विद्या, हरति विघ्न छाया, जय देवी जय देवी ॥१०॥

जय दयालु भक्तोंका, पालन करती है, मां पालन करती है,
भवका भय हरती है, आयुष देती है, जय देवी जय देवी ॥११॥

जय वरदान सभी को देती सुर नर को, मां देती सुर नर को,
अरुण कमल वपु धरती, हरती नयनोंको, जय देवी जय देवी ॥१२॥

जय वर अभयांकुश को पाशधारिणी हो, माँ पाशधारिणी हो,
जय ललाट शशिधारिणी, चन्द्रवदनी तू हो, जय देवी जय देवी ॥१३॥

मणि जड़ित्र मन्दिरमें, बसती जितकामा, माँ बसती जितकामा,
दिव्याम्बर भूषणसे, शोभती तू श्यामा, जय देवी जय देवी ॥१४॥

तब चरणोंके सेवक, तांत्रिकको सुखदा, माँ तांत्रिको सुखदा,
आराधक भक्तोंको, मनवाँछित वरदा, जय देवी जय देवी ॥१५॥

सुरनर महिमा तेरी, जानिहि सफल बने, माँ जानिहि सफल बने,
पूजननिधि मंत्रों में, गुण तेरा सुभगे, जय देवी जय देवी ॥१६॥

जानुं तेरी शरण ही भयहरणी गुरु तू, मां भयहरणी गुरु तू,
मोहित न कर ज्ञान हि विज्ञान हि दे तू, जय देवी जय देवी ॥१७॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

केसर कपूर वासित, अमल दीपमाला, माँ अमल दीपमाला,
शोभे तेरा सिंहासन नजीक विमला, जय देवी जय देवी ॥१८॥

नमतो स्तनभारोंसे, विधिको वर देती, माँ विधिको वर देती,
मधुराक्षरकी स्तुतिसे, चरणोंमें लेती, जय देवी जय देवी ॥१९॥

जो नर नारी गाये तेरे पूजनमें, माँ तेरे पूजनमें,
कष्ट कटेगा, होगा बड़ा सज्जनों में, जय देवी जय देवी ॥२०॥

स्तुति यह गाये हर्षे पूजामें भक्तो, माँ पूजामें भक्तो,
तीर्थरूप चरणों में, होंगे आसक्तो, जय देवी जय देवी ॥२१॥

॥ श्री भुवनेश्वरी माँकी आरती ॥

बसती प्रवरातीरे, वेदो गुण गाते, माँ वेदो गुण गाते ॥
त्रिभुवनमें रमती हो, नारायणि माता, जय देवी जय देवी ॥१॥

अखिल जगतकी तू हो जननी आधारा, माँ जननी आधारा ॥
शरणागत रक्षा कर, ऋषि मुनि निर्धारा, जय देवी जय देवी ॥२॥

शिवको मुग्ध किया था, जय मोहिनी रूपे, माँ जय मोहिनी रूपे ॥
मुझे जगतमें तारो, डूबा भव कूपे, जय देवी जय देवी ॥३॥

शशि समान मुख सुन्दर, दाँत कुन्द शोभे, माँ दाँत कुन्द शोभे ॥
पदकांति मदन थोभे, मुख संपत लोभे, जय देवी जय देवी ॥४॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पूर्ण चन्द्र सम वदना, डोलर सम रदना, मां डोलर सम रदना ॥
नख तेजे जित मदना, मुधुकैटभ कदना, जय देवी जय देवी ॥५॥

कमल पुष्प सम नयना, शेषनाग शयना, मां शेषनाग शयनां
गरुड़ वाहना गहना, सर्वकष्ट दहना, जय देवी जय देवी ॥६॥

पहिने झांझर चरणां मणिके आभरणां, माँ मणिके आभरणां ॥
पहिनी साड़ी कंचुकी मुकट शिरें धरणाँ, जय देवी जय देवी ॥७॥

शोक रोग हरती माँ, ब्राह्मण सुख करती, मां ब्राह्मण सुख करती ॥
दया करो शरणागत, गजको उद्धरती, जय देवी जय देवी ॥८॥

सिर राहुका छेदी, देवो संतोष्या, देवो संतोष्या ॥
अमृत दिया देवोंको, असुरोंको शोष्या, जय देवी जय देवी ॥९॥

असुर हण्या संग्रामे, साध्या सिद्धोंको, मां साध्या सिद्धोंको ॥
ध्यान धरें बुद्ध मुनि, भुवनेश्वरी मां को, जय देवी जय देवी ॥१०

गाये सुने स्नेहसे, स्तुति उत्तम तेरी, मां स्तुति उत्तम तेरी ॥
कष्ट कटेगें होगी ऋद्धि सिद्धि भारी, जय देवी जय देवी ॥११॥

गाये सुने स्नेहसे, आरती यह तेरी, मां आरती यह तेरी ॥
हरे विघ्न, सुख सम्पति पाये नरनारी, जय देवी जय देवी ॥१२॥

प्रातः सायं पूजा समये जो हि पढ़े, मां समये जो हि पढ़े ॥
तीर्थरूप चरणोंमें रह सम्पति बढ़े, जय देवी जय देवी ॥१३॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीभुवनेश्वरी पीठ में धार्मिक उत्सव

(गुजराती विक्रम-संवत् के अनुसार तिथि समझें)

कार्तिक:—सुदि १ विक्रम संवत् नया वर्ष प्रारंभ, भक्तोंको आचार्य श्री का आशीर्वाद, अन्नकूट-उत्सव।

मार्गशीर्ष—सुदि ११ गीता-जयन्ती।

पौष—मकर-संक्रांति १४ जनवरी।

माघ—मासकी छोटी नवरात्रि-उत्सव सुदि १ से ८ शतचंडी महायज्ञ। सुदि ५ वसंपपंचमी। आचार्यश्री चरणतीर्थ महाराजका जन्म-जयंती महोत्सव। सुदि ८ भीष्माष्टमीका उत्सव, शांति पर्वका स्वाध्याय कथा पाठ। वदि १३ महाशिवरात्रि उत्सव। ईस्वी सन् १९१५, जनवरी २७ को महात्मा गाँधीजीको मानपत्रके साथ महात्माकी पदवी रसशाला औषधाश्रम गोंडलकी ओरसे दी गई थी, उसका उत्सव। ता० ३० जनवरी १९४८ को महात्माजीकी पुण्यतिथि—उनके आत्माकी शांतिके लिये—श्राद्ध, ब्रह्मभोजन और गीता-स्वाध्याय।

फाल्गुन—सुदि १५ हुताशनी-उत्सव।

चैत्र—सुदि १ से अष्टमी तक छोटी नवरात्रि। शतचंडी महायज्ञ। सुदि ९ रामनवमी-उत्सव, श्री वाल्मीकि रामायणका पारायण-स्वाध्याय। सुदि ११ श्री वल्लभाचार्य महाराजकी जयंती। श्री छत्रपति शिवाजी महाराज की जयन्ती (ता० ९-५-१६०५)

वैशाख—वदि ५ से ९ श्रीभुवनेश्वरी प्रतिष्ठा-महोत्सव, श्रीभुवनेश्वरी प्राकट्य दिवस-पाटोत्सव।

आषाढ़—सुदि १ से ९ छोटी नवरात्रि शतचंडी महायज्ञ। सुदि १५ गुरुपूर्णिमा, गुरुपूजन, व्यासपूजन।

श्रावण—पूर्णिमा रक्षाबन्धन-उत्सव। श्रावणी महोत्सव। श्रावण कृष्ण पक्ष वदि ८ जन्माष्टमी—श्रीकृष्ण भगवान्का जन्म-महोत्सव। श्रीमद्भागवत तथा श्रीहरिवंश-पारायण।

आश्विन—सुदि १ से ८ महानवरात्रि, शारदी नवरात्रि, शतचंडी महायज्ञ। सुदि १० विजयादशमी-उत्सव शमी पूजन, दशहरा। सुदि १५ श्रीभुवनेश्वरीकी प्रतिष्ठा करनेवाली श्री ललितांबाका जन्म-दिन-उत्सव। वदि १३ धन्वंतरि जयन्ती, धनतेरस, धन्वंतरि पूजन और यज्ञ। सुवर्ण पूजा। कृष्ण चतुर्दशी, महाकाली स्वरूपसे श्रीभुवनेश्वरी माँका पूजन नैवेद्य। अमावास्या दीपोत्सवी, दीपावली, शारदा-पूजन, लक्ष्मी-पूजन। नये सालका चोपड़ा पूजन।

—:o:—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँके भक्तों और धनवान सज्जनों को नीचे लिखे कार्योंमें अपने धनका विनियोग करना चाहिए

१. विल वसीयतनामा—अपनी मिलकियत धन, जमीन, मकान आदि सम्पत्ति या उसका कुछ हिस्सा अपनी हयातीमें (जीवनकालमें) अथवा अपने मृत्युके बाद जब भी माताजीको अर्पण करनेकी इच्छा हो, अपने विलमें लिख सकते हैं। ऐसे विलकी एक कापी श्रीभुवनेश्वरी पीठको भेजना चाहिए। जो माँके दरबारमें दफ्तरमें सुरक्षित रक्खी जाती है और माँको अर्पण की हुई सम्पत्तिका उपयोग उनके लिखे अनुसार किया जाता है।

२. धार्मिक पुस्तक-प्रकाशन—श्रीपीठकी ओरसे जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं सैकड़ा प्रतिशत–९० बिना मूल्य–भेंट रूपमें भक्तोंको भेजी जाती हैं। मूल्य इसलिये छापा जाता है कि पुस्तक विक्रेता (बुकसेलर) आदि भी मंगवाते हैं। दुर्गा सप्तशती चंडीपाठ, सौन्दर्य लहरी, श्रीमद्भगवद्गीता, भुवनेश्वरी कथा, प्रतिष्ठा महोत्सव परचा, चमत्कारके अनुभवका पत्रव्यवहार, लघुस्तव, भुवनेश्वरी स्तोत्र, परिचय पुस्तिका, हिन्दी अनुवादसहित श्रीसूक्त और पुरुष सूक्त, सन्ध्या वैश्वदेव, भुवनेश्वरी पूजा-पद्धति, लघुस्तव हिन्दी अनुवाद, भूगर्भजल ज्ञान-शास्त्र, देवीभागवत, धार्मिक कर्मकांड तंत्रशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, पुराण आदि शास्त्रोंकी छोटी-बड़ी पुस्तकें, जो कि लोगोंको इह लोक-परलोकका कल्याण करने वाली हैं सुखशांति देनेवाली हैं, प्रकाशितकी जाती हैं। जो भक्त पुस्तक प्रकाशनके कार्यमें आर्थिक सहायता भेजना चाहें, भेज सकते हैं। किसी भी पुस्तकका प्रकाशन अपनी ओरसे कराना चाहें तो वैसी व्यवस्थाकी जा सकती है। यह सरस्वती सेवा–साहित्य सेवाका बड़ा पुण्य कार्य है। इसमें अपनी शक्तिके अनुसार हिस्सा लेना प्रत्येक भक्त बहिनों, भाइओंका और धनवानोंका कर्तव्य है।

३. यात्रियोंको भोजन-अन्नक्षेत्र अतिथि-सत्कार—माँकी यात्रा-दर्शनके लिए हमेशा देश-विदेशसे सैकड़ों यात्री और विद्वान् ब्राह्मण, साधु, संत, महंत, सनातन वेदधर्मी और जैन, सिक्ख, पारसी आदि धर्मके माँके भक्त कुटुम्ब परिवारके साथ आते रहते हैं। उन्हें उतरने ठहरने और भोजनादि की और बीमारोंकी ओषधि-व्यवस्था बिना मूल्यकी जाती है। इस पुण्य-कार्यमें जिनकी जो इच्छा हो धनधान्य तैल, घी, गुड़, खांड, फलादि भोजनकी सामग्रीमें से जो चाहें वह वस्तु भेज कर या इन चीजोंके लिये धन भेजकर इस अन्नदानके अतिथि-सत्कार के पुण्यमें भाग ले सकते हैं।

४. धर्मशाला अतिथिगृह—देश विदेशसे यात्री और अन्य माँके भक्त, जो दर्शनके लिये आते हैं उनके ठहरने-भोजन आदिकी व्यवस्था श्रीपीठकी ओरसे की जाती है। माँके भक्तोंने एक धर्मशाला बनवा दी है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यात्रियोंका बारहों मास आना-जाना सैकड़ों की संख्या में होनेके कारण एक धर्मशालामें सभी का समावेश नहीं कर पाते इसलिए दूसरी धर्मशाला बनानेका निर्णय ट्रस्टने करके और भक्तोंको, सखावती सज्जनोंको प्रार्थना-पत्रिकायें भेजकर प्रायः तीन लाख रुपयाकी आवश्यकता बतलाई थी। भक्तोंकी ओरसे १,५०,००० (डेढ़लाख रुपया) आ जानेसे दूसरा अतिथिगृह–धर्मशाला एक लाख तीस हजार रुपया खर्चकर बनवाई गई है, इसमें यात्री लोग रहते हैं। अभी इसमें डेढ़लाख रुपयाकी और आवश्यकता है। चार हजार रुपया देने वालोंके नाम एक कमरा बनवा कर उनका स्मारक किया जाता है। ५०० रुपया देने वालोंके नामकी आरसकी तख्ती रखी जायगी। इस धार्मिक कार्यमें माँके भक्तोंको चाहिए कि अपनी शक्तिके अनुसार धन भेज कर पुण्य कार्यमें अपना हिस्सा बटायें।

५. आरतीका पैसा—श्री भुवनेश्वरीकी छवि-मूर्ति और अन्य देव-देवियोंके पूजन, कथा, धार्मिक कार्यों और यज्ञयाग आदिमें देवताओंकी आरतीकी जाती है। उसमें जो पैसा आये, अपने यहाँ माताजीका खाता रखकर जमा करें और जब अनुकूलता हो तब गोंडल भेजने का प्रबन्ध करें।

६. गोलख-पेटी-धर्मादा पेटी—व्यापारी पेटियाँ, कंपनियाँ, कारखानावाले, दुकानदार अपने घर पर लकड़ी की पेटी बनवा कर ऊपर भुवनेश्वरी गोंडल-गोलख-पेटी इस प्रकार लिखवाकर रख सकते हैं। और अपने यहाँ आने जानेवाले कारखाना कंपनीके ग्राहक सज्जन, भक्त अथवा अपने घरके लोग चाहे जब इस पेटीमें यथाशक्ति धन डाल सकते हैं। चाहे जब पेटी खोल कर जो धन निकालें अपने चोपड़ा में माँके खातामें जमा कर सकते हैं और चाहे जब गोंडल भेज सकते हैं।

७. नये सालकी और दिवाली के दिन शारदा पूजनकी और नये वर्षकी बोणी विक्रम संवत्की दिवाली शारदा पूजन, चोपड़ा पूजन होता है और दूसरे दिन कार्तिक सुदि १ को गुजराती वर्ष प्रारंभ होता है। शारदा पूजनमें और नयी सालकी बोणीके रूपमें यथाशक्ति धन माँके खातामें जमा करें और माँकी छवि अथवा मूर्तिका पूजन कराकर नये वर्षकी बोणी करें, सारा वर्ष उद्यम धंधामें वृद्धि होनेके साथ धनधान्य और सम्पत्ति बढ़ती है। कुटुम्ब परिवार आरोग्य रहते हैं।आनंद मंगलमें साल व्यतीत होता है।

८. शृंगार-वस्त्र आभूषणः—माताजीको पहिनानेके लिये सूती रेशमी चाहे जिस प्रकारके वस्त्र साड़ी, कंचुकी, घणिया जिनको बड़ी उम्रकी बहिन पहिन सके ऐसे पहिनाये जाते हैं, साड़ी पाँच वारकी होती हैं। सोना, चाँदी, जवाहरके आभूषण आदि श्रद्धाशक्तिके अनुसार भक्तजन भेज सकते हैं। भक्त रजिस्टर पारसलसे कपड़ा भेज सकते हैं, विदेशमें रहने वाले भक्तोंको चाहिए कि वे रजिस्टर्ड पोस्ट पारसलसे साड़ी आदि कपड़ा भेज सकते हैं। उस पारसल पर उचित मूल्य लिखें और 'भुवनेश्वरी माँको भेंट' ऐसा लिखें ताकि बम्बई कस्टमवाले कभी कस्टम ड्यूटी माफ करते हैं, कभी कुछ लेते हैं। सो जो भक्त बहिनें माँको साड़ी आदि तीन कपड़ा चढ़ाना, पहिनाना चाहें रजिस्टर्ड पारसलसे (एअरमेलसे या सीमेलसे) भेजें। यहाँ पारसल आनेसे कभी कस्टम ड्यूटी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चढ़ायी होगी तो भरकर पारसल छुड़ा लेंगे और उनके लिखे दिवसको साथ ही शुभ दिवस देखकर, उनके नामसंकल्प कराकर माँ को पहिनायेंगे।

९. कमाई कमाणी पैदाइशमें हिस्सा—व्यापार, उद्योग नौकरी आदि जो करते हों उसकी आयमें सैकड़ा-प्रतिशत अमुकहिस्सा धन माँ के चरणमें भेजनेका संकल्प अनेक भक्त करते हैं। इस प्रकार जिन्होंने जो संकल्प किया हो यहाँ लिखनेसे उनके नामके साथ नोंध की जाती है और इस प्रकार भेजे गए धनका उपयोग उनकी इच्छानुसार माँके धार्मिक कार्योंमें किया जाता है।

१०. महापूजा—प्रत्येक भक्तको चाहिए कि अपने और कुटुम्ब परिवारके कल्याण, सुख, संपत्ति आरोग्य के लिये माँकी महापूजा साल भरमें कमसे कम एक बार आवश्य करवायें। नये वर्षका प्रारंभ, अपना जन्म दिन अथवा कुटुम्ब परिवारके जन्म दिन पर, अपने यहाँ लग्न प्रसंग, सीमंत, संतानका जन्म, यज्ञोपवीत आदि शुभ प्रसंग के समय कथा पारायण यज्ञ-यागादि धार्मिक कार्य हो तब गोंडलके मंदिरमें माताजीको धूप, दीप, नैवेद्य, ब्राह्मण, कुमारिका, वटुक भोजन आदिसे महापूजा करायी जाती है। इसके लिये अपनी इच्छानुसार धन-धान्य, चीज वस्तु भेजनेसे उनके नामसे संकल्प करा कर महापूजा करायी जाती है।

११. माँ के नैवेद्य भोग प्रसादीकी सामग्री—माताजीको प्रातःकाल, दोपहर, शामके नैवेद्य प्रसादीकी विविध सामग्री चढ़ाई जाती है। सामग्रीकी वस्तु गेहूँ, बाजरी, चना, मूँग, उड़द, तुवरी, चावल, घी, गुड़, चीनी-शक्कर, तेल, बादाम, पिस्ता, चारोली, द्राक्षा, काजू आदि वस्तु ट्रक, बैलगाड़ी, बस, ट्रान्सपोर्ट सरविस आदिके रास्तेसे भेज सकते हैं। विदेशमें रहनेवाले भक्त ऐसी चीजवस्तु भेजनेके लिये देशमें अपने स्वजनोंको लिख सकते हैं और धन भेजते हैं तो उनकी लिखी चीज वस्तु खरीद कर माँको अर्पण कर भंडारमें रखी जाती है। इन चीजोंका उपयोग माँके भोग प्रसाद रूपमें चढ़ाया जाता है और यात्रा दर्शनके लिये आने वाले भक्तोंको भोजनमें और गरीबोंके अन्नक्षेत्रमें भी इन वस्तुओं का उपयोग होता है।

१२. यज्ञ-याग होम-हवन—आश्विन-आसो मासकी बड़ी नवरात्रि और महामास, चैत्र मास, आषाढ़ मासकी छोटी नवरात्रिको शतचंडी आदि यज्ञ होता है। वैशाख वदि ५ से ९ तक प्रतिष्ठा पाटोत्सव के दिन, पर्व त्यौहारोंके दिन यज्ञ होते हैं और देशका दैवी, मानुषी संकटोंसे रक्षणके निमित्त और अपनी इच्छा हो जब शतचंडी, सहस्रचंडी, अयुत चंडी, लक्षचंडी, महारुद्र, अतिरुद्र, गायत्रीपुरश्चरण, विष्णुयाग, गणेशयज्ञ आदि भी बादमें कराये जाते हैं। जिन भक्तोंकी जो इच्छा शक्ति और संकल्प-मानता बाधा हो करा सकते हैं, इस संबंधमें अधिक जानकारी पत्र-व्यवहारसे की जा सकती है।

१३. विदेशसे धन भेजनेके लिए—हालमें विदेशोंसे भारतमें तथा अन्य देशोंमें पैसा भेजनेकी कठिनाई है। इससे विदेशके भक्त लोगोंको यहाँ धन भेजना कठिन हो गया है। इस कारण भक्त लोगोंको दुःख होता है और धार्मिक भावना में बाधा उत्पन्न होती है, यह हम जानते हैं, इसलिये हमारी सलाह है कि माताजीको भेजने का धन अपने पास रखें और अपने चोपड़ेमें जमा करते रहें। जब किसी परिचित जनोंका देशमें आना हो, जब उनके साथ भेजनेको ध्यान में रखें। संभव हो तो अपने देश या लंदनके किसी बैंकका ड्राफ्ट भी भेज सकते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस संबंधमें हमारी राय है कि अपनी सरकारको प्रार्थना पत्र देनेसे सरकार से यह रुपया भेजनेकी परमिट मिलती है। कई भक्तोंको अमुक महीनामें अमुक रकम यहाँ भेजनेकी परमिट मिली है। परमिटके लिये नीचे लिखे अनुसार किसी वकीलकी सलाहसे अपनी सरकारके इक्सचेन्ज कंट्रोलरको लिख सकते हैं।

"हम गोंडल सौराष्ट्रके भुवनेश्वरी पीठकी भुवनेश्वरी माताके भक्त हैं, हम कई वर्षोंसे इस धर्मस्थानको पूजापाठ, होम, हवन, नैवेद्य थाल, गौशाला, अतिथिसत्कार, गरीबों और यात्रिओंको भोजन आदि धार्मिक कार्योंके लिये धन भेजते हैं। भुवनेश्वरी देवी हमारी इष्ट देवता कुलदेवी हैं। इण्डियामें देवदेवियोंके लाखों मंदिर हैं लेकिन पीठके साथका भुवनेश्वरी मंदिर सारे भारतमें एक ही गोंडल सौराष्ट्रमें है। यह मंदिर गवर्नमेण्ट आफ इण्डियामें रजिस्टर्ड हुआ है। इसका चार्टर्ड एकाउन्टन्ट प्रतिवर्ष सरकारको रिपोर्ट भेजता है। इससे इस धर्मस्थानमें भेजा हुआ धन परोपकारमें खर्च होता है। इससे हमको और हमारी सरकारको, यहाँकी और हम जहाँ रहते हैं उस देशको भुवनेश्वरी माताका आशीर्वाद मिलता है, इसलिये हमें पैसा भेजनेकी परमिट मिलनी चाहिए।"

ऊपर लिखा हुआ अथवा वहाँके किसी वकील या कानूनी सलाहकारके मार्गदर्शनके अनुसार अपनी सरकार को प्रार्थना पत्र देनेसे परमिट मिल सकती है।

१४. व्यास पंचांग—रसशाला औषधाश्रम गोंडलकी ओरसे प्रतिवर्ष विक्रम संवत्का कार्तिकी व्यास पंचांग गुजरातीमें प्रकट होता है। इसे लाखों मनुष्य पढ़ते हैं। इसमें कभी कभी हिंदीमें भी लेख आता है। यह पंचाँग रसशाला औषधाश्रमसे हम प्रतिवर्ष चार-पाँच हजार कापी खरीदकर भुवनेश्वरी पीठके भक्तोंको विना मूल्य भेजते हैं। इस पंचांगका तौल प्रायः एक रतल है। मूल्य रु० २–५० और पोस्टेज रु० १—० एक लगता है। इसमें ज्योतिषके सब विषयोंके अलावा आयुर्वेद, मंत्रतंत्र, पाठपूजाके स्तोत्र आदि कई लोकप्रिय विषय भी प्रकाशित होते हैं। इस धार्मिक प्रकाशन-कार्यमें भक्त लोग आर्थिक सहायता भेज सकते हैं।

१५. भुवनेश्वरी माँका खाता—कारखानेदार, दुकानदार, शर्राफ, व्यापारी या अन्य उद्योग धंधावाले, नौकरी करनेवाले आदि गृहस्थ अपने वहीवटी चोपड़ामें भुवनेश्वरी माँका खाता रखते हैं। यह शकुन रूप है। उसमें कार्तिक या चैत्र वर्षके प्रारंभमें बोणीरूपमें तथा साल भरमें अपने यहाँके शुभ प्रसंगपर या आर्थिक लाभ मिलने पर, अपनी कमाईका कुछ हिस्सा माताजीके खातामें जमा करते हैं। वह धन अपनी अनुकूलतासे भेजा जा सकता है।

१६. धारणाके संकल्पके धार्मिक कार्य करानेके लिए—अपने यहाँके शुभ प्रसंग पर या घरके किसी व्यक्ति ने यदि किसी धार्मिक कार्य करनेका संकल्प या मानता किया हो और वह कार्य अमुक तिथि या तारीखको करना हो तो कुछ दिन आगे पत्र लिख भेजना चाहिए। ताकि उस तिथि या तारीखको लिखा हुआ धार्मिक कार्य कराया जा सके। यदि तब तक भेजा हुआ पैसा नहीं आया हो तो माताजीके भंडारसे उनके नामसे रुपया लेकर वह कार्य लिखी तिथि पर ब्राह्मणों द्वारा कराया जाता है और जब उनकी ओरसे रुपया आ जाता है तब भंडारमें जमा कराया जाता है। हाँ, निश्चित तिथिके पहिले पत्र मिल जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१७. बच्चोंका और बड़ोंका शिरके बाल उतारना—कई भक्त अपने बच्चोंका सिरके बाल भवनेश्वरी माँके मंदिरमें अथवा अन्य धर्मस्थानोंमें उतारनेका संकल्प करते हैं या मानता मानते हैं। कई बड़े लोग भी अमुक कार्यकी सफलताका संकल्प कर अपने सिरका बाल धर्मस्थानोंमें या भुवनेश्वरी मंदिरमें उतारना चाहते हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि भारतमें रहे हुए सभी देव और देवियोंका अंशावतार भुवनेश्वरी हैं। वह गोंडल आकर बाल उतार सकते हैं। यदि किसी कारणवश विदेशसे गोंडल न आ सकें तो बच्चोंके और बड़ोंके बाल अपने यहाँ की माताजीकी छविके सामने अपना संकल्प उच्चार कर और माताजीकी प्रार्थना करके माताजीके सामने धूप, दीप, नैवेद्य धरके बाल उतारकर उसकी कपड़में पोटली बना कर रख छोड़ना चाहिए। जिसका बाल उतारा हो उसको स्नान कराकर उसके मस्तक के ऊपर माताजीके कुमकुमसे स्वस्तिक-साथीया करना और ललाटमें कुमकुमका टीका (चांदला) कर पीछे मिष्ठान्न भोजन कराना वहिए। बालकी पोटली में से थोड़े बालकी लट लिफाफामें डाल कर गोंडल भेजना और जिस तिथि-तारीख और समयको बाल उतारा हो वह लिखना, उनके नामसे वह बालकी लट माताजीके चरणमें धरकर उनके कल्याणका संकल्प कराकर नदीमें या तालाबमें वहा देते हैं। अपने पास जो बालकी पोटली रखी हो वह भी नदी या समुद्रमें वहा देना चाहिए। गोंडलमें उनके नामसे माताजीको थाल धरकर ब्राह्मण, कुमारिका, बटुकको भोजन कराते हैं। कई भक्त इस संबधमें पूछते हैं। सबको पत्रसे खुलासा लिखना संभव न होनेसे यहाँ स्पष्टीकरण किया जाता है।

१८. बच्चोंका और बड़ोंका किसी वस्तुसे तौल करना—श्री भुवनेश्वरी पीठमें या किसी देवस्थानमें जा कर बच्चोंको और बड़ोंको किसी वस्तुसे तौलनेका संकल्प किसी कारणवशात् कुछ लोग करते हैं। और बड़े लोग ६० सालकी या ७०–८०–९० सालकी उम्रमें किसी वस्तुसे तुलादान करना चाहते हैं। वे यहाँ आकर माताजीके सामने अपना संकल्प पूर्ण कर सकते हैं।

१९. गौशाला—गायोंका रक्षण, पालन, पोषण करना भारतवर्षके प्रत्येक मनुष्यका और धर्मस्थानोंका कर्तव्य है। गोपालन यह श्रीपीठका महत्वपूर्ण अंग है। सनातनधर्म के अनुसार गायमाता सर्व देवता देवियोंका स्वरूप है। भुवनेश्वरी पीठकी ओरसे गायोंका पालन-पोषण हो रहा है और प्रतिदिन इनकी संख्या बढ़ रही है। इस कारण गौशालाके लिये बड़े स्थानकी आवश्यकता प्रतीत हुई है। जमीनकी खरीदी उसमें मकानोंके निर्माण आदिमें करीब दो लाख रुपयाके खर्चका अन्दाज है। गौशालाकी व्यवस्था करनेके लिये अपने धनका उपयोग गौभक्त धनवान् भाइयों बहिनों को करना चहिए जिससे वह महापुण्यके भागी होंगे।

२०. आयुर्वेदिक ओषधिभवन और अस्पताल—देशमें स्थान-स्थान पर डाक्टर संचालित एलोपेथी अस्पताल सरकार चलाती है। सरकारके प्रतिनिधि रूप प्रधान और उच्च अधिकारिओं की स्वीकृति के अनुसार भारतकी प्रजामें ८५ फीसदी मनुष्य आयुर्वेदिक औषधोंसे रोगमुक्त होकर अपना आरोग्य रक्षण कर सकते हैं और एलोपेथी डाक्टरों का और उनकी दवाका प्रतिशत १५ लोग ही लाभ ले सकते हैं। आयुर्वेदिक औषधियों का विना मूल्य लाभ प्रजा ले सके ऐसी व्यवस्था नहीं जैसी हैं। आचार्य श्री के अग्रगण्य वैद्य होनेके करण व्याधिग्रस्त लोग ओषधि के लिये सलाह सूचना लेनेको प्रायः आते हैं। इस कारण श्रीभुवनेश्वरी पीठकी ओरसे एक आयुर्वेदिक निःशुल्क औषधालय खोला

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गया है। उसका लाभ सैकड़ों लोग ले रहे हैं और श्रीपीठका हजारों रुपया इसमें खर्च होता है। गोंडलके निकटवर्ती शहर ग्रामके तथा देशके दूर प्रदेशमें रहनेवाले लोग यहाँ औषधिके लिये आते हैं। यह कार्य प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसलिये श्रीपीठकी ओरसे आयुर्वेदक बड़ा अस्पताल चालू करनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई हैं। हमारी सरकार एलोपेथी साधनोंके लिए जितना रुपया खर्च करती है उसका आयुर्वेदके लिए शतांश भी खर्च नहीं करती। हमारे धनाढ्य श्रीमंत लोग भी अपनी कीर्तिके लिये और सरकारको प्रसन्न रखनेके लिये अपने धनका उपयोग ऐलोपेथी चिकित्साके लिये करते हैं और क्षय-केन्सर जैसे असाध्य रोगके अस्पताल खोलनेमें भी सरकार को लाखों रुपया देते हैं। एलोपेथीके पीछे दुनियाके बड़े बड़े देश रुपया खर्च करने पर भी क्षय, केन्सर, मधुप्रमेह हृदयबंध, ब्लडप्रेसर जैसे असाध्य रोगमें सफल नहीं हुए, आयुर्वेदमें जैसे असाध्य रोगोंके निवारणकी व्यवस्था है किन्तु उसका लाभ प्रजा ले सके ऐसी व्यवस्था सरकार नहीं करती। हम धनवानोंको अनुरोध करते हैं कि आयुर्वेद क्षेत्रमें अपने धनका उपयोग करना ही परोपकार और पुण्यका काम है। इस सम्बन्ध में आचार्य श्री मार्गदर्शन दे सकते हैं। आयुर्वेद अस्पतालकी योजना थोड़े दिनमें चालू होगी।

२१. आचार्यश्रीसे गुरुमंत्र लेना—भुवनेश्वरी माँके भक्त लोग आचार्यश्री से गुरुमंत्र लेते हैं और लेनेकी माँग करते हैं। उनको ज्ञात हो कि श्रीभुवनेश्वरी गायत्री ही माँके भक्त भाइयों, बहनोंका गुरुमंत्र है फिर भी आचार्यश्री से गुरुमंत्र लेनेका आग्रह रहता है। इसलिये जो भक्त यहाँ आ सकते हैं उनको गुरुमंत्र दिया जाता है और जो यहाँ नहीं आ सकते वह अपना फोटो-चित्र डाकसे भेजनेपर माँके सन्मुख उस फोटोको गुरुमंत्र दे कर वह फोटो भक्तको वापस भेज दी जाती हैं। गुरुमंत्रकी दक्षिणा इच्छा और शक्तिके अनुसार भेज सकते हैं उसका उपयोग प्रसाद, आदि धार्मिक कार्योंमें होता है। इस प्रकार भक्त आचार्यश्रीका शिष्य बनता है। ऐसे शिष्यवर्ग गुरुपूर्णिमा (आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा) के दिन तथा अपने यहाँके शुभ प्रसंगमें, नूतन वर्षके आशीर्वादके लिये इस प्रकारसे गुरुदक्षिणा भेजने हैं। पत्रमें या मनीआर्डरके कूपनमें यह गुरुदक्षिणाके लिये आचार्यश्रीको भेंट भेजी है ऐसा स्पष्ट लिखें तभी आचार्यश्री उसको स्वीकार करते हैं। उसका उपयोग धार्मिक कार्योंमें किया जाता है।

२२. भक्तगण के लिये प्रसादी की वस्तुएं—भक्तों माँके चरणकमलमें जो कुछ चीजवस्तु कपड़ा, अलंकार छोटी-बड़ी रकम आदि देश-विदेशोंसे भेजते हैं उनको नीचे लिखी हुई प्रसादी भेंटरूपसे डाकसे भेजी जाती है।

माँके चरणकमलमें नित्य चढ़ाया जाने वाला कुमकुम। आश्विनमासकी बड़ी नवरात्रि में, महामासकी चैत्र मासकी और आषाढ़ मासकी छोटी नवरात्रिमें जो शतचंडी (१००) महायज्ञ और प्रसंगोपान्त अन्य यज्ञ है, उसकी भभूती।

२३. मंगलसूत्र—माँको लाल रक्षा मंगलसूत्र नित्य अर्पण किया जाता हैं। यह बीमारीमें अथवा लग्न, यज्ञोपवीत, होम-हवन आदि शुभ कार्योंमें यजमान और ब्राह्मणोंको हाथमें बाँधी जाती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२४. प्रसादी की शक्कर—यह कूट कर भेजी जाती है। यह दूसरी पाँच दश किलो शक्कर पर छिड़कनेसे सबकी सब प्रसादी हो जाती है। पीछे उसका उपयोग खानपान या स्नेही संबंधियोंको बाँटनेमें करना चाहिए।

माताजीकी रंगीन छवि और छपा हुआ चिन्तामणियंत्र फ्रेममें लगा कर पूजामें रखना और उसका नित्य-दर्शन करना चाहिए।

२५. परिचयकी पुस्तिका—यह हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी, कन्नड़ी, तेलुगू, मराठी आदि भाषाओंमें छपाकर भेजी जाती है।

गोंडल आनेवाले यात्रियों के लिये

श्री भुवनेश्वरी माँके दर्शनके लिये गोंडल आनेवाले यात्री लोग ध्यानमें रखें कि रेलवे का रास्ता इस प्रकार है—

१. बम्बईकी ओरसे आनेवालोंको अहमदाबाद होते हुये वीरमगाम आकर राजकोट आनेवाली गाड़ीमें बैठना चाहिये। वह वढवाण, राजकोट होकर सीधी गोंडल पहुँचती है, कहीं बदलना नहीं पड़ता।

२. दिल्ली आदिसे आनेवाले मारवाड़ जंकशन, आबूरोड, महेसाणा होकर वीरमगाम आते हैं। वहाँसे राज कोटकी गाड़ीमें बैठ कर सीधे गोंडल पहुँचते हैं।

३. विदेशसे और भारतके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंसे विमान-प्लेनसे आनेवाले बम्बईसे अथवा किसीभी एरोड्रोमसे निकलकर सीधे राजकोट पहुँचते हैं। वहाँसे रेल्वेसे या मोटरसे २४ मीलके रास्ता पर गोंडल है।

४. जूनागढ़-गिरनार, सोमनाथ, प्रभास पाटण, पोरबंदर-सुदामापुरी, शत्रुंजय आदि तीर्थस्थानोंमें आनेवालोंको गोंडल स्टेशनसे गुजरना होता है अर्थात् जाते वख्त या लौटते वख्त गोंडल उतरकर माँके दर्शन कर सकते हैं।

५. भुवनेश्वरी पीठमें उतरने, रहने, ठहरनेके लिये अतिथिगृह (गेस्ट हाउस) है। वहाँ कुटुम्ब परिवारके साथ रहनेकी सब प्रकारकी उत्तम सुविधा है। नवरात्रि आदि उत्सवोंमें यात्री लोगोंका आगमन ज्यादा होता है इसलिये अपने आनेका समय लिख भेजनेसे ठहरनेकी व्यवस्था करना सरल रहता है। सब प्रकारका पत्र व्यवहार—श्री भवनेश्वरी पीठ, गोंडल (सौराष्ट्र) इस पते पर करना चाहिए।

———

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीभुवनेश्वरी पीठ में कराये जानेवाले धार्मिक कार्योंका अन्दाजी खर्च

माँकी भक्त बहिनें और भाई यहाँ मन्दिरमें अपनी ओरसे भिन्न-भिन्न धार्मिक कार्य करानेके खर्चके लिये पूछते रहते हैं। सभीको अंदाजी खर्चका उत्तर देना कठिन होता है और समय लगता है। अपने यहाँ के लग्न, यज्ञोपवीत, जन्मदिन आदि शुभ प्रसंग के अनुसार अपनी ओरसे यहाँ माँके मंदिरमें जो कोई कार्य करना हो, मानता की हो, संकल्प किया हो या किसी प्रसंग पर तात्कालिक कुछ धार्मिक कार्य करनेकी इच्छा प्रेरणा हो तो पत्र लिख भेजनेसे निजी रकम आनेसे पूर्व हो माँके भंडारसे रुपया उनके नामसे लेकर वह कार्य कराया जाता है और जो खर्च उस कार्यमें होता है वह उनके नाम लिखा जाता है। जब उनकी ओरसे रुपया आजाता है तब जमा कराया जाता है।

रु० १०–०० एक दुर्गासप्तशती चंडीपाठका, सादा पाठ करनेका ब्राह्मणको दक्षिणा पूजा द्रव्य और माँके चरणोंमें धरने आदिका।

रु० १५–०० किसी भी मंत्रका संपुट एक या दुर्गासप्तशती चंडीपाठ का ब्राह्मण दक्षिणा पूजा द्रव्य आदि।

रु० ७५–०० सादे १० पाठका पाठात्मक नवचंडीका ब्राह्मण दक्षिणा पूजा द्रव्य नैवेद्य थाल भोग आदि।

रु० १८०–०० रुपया किसी भी मंत्रका संपुटित १२ पाठकी पाठात्मक नवचंडीका खर्च दक्षिणा पूजा द्रव्य आदि।

रु० ४०–०० माँको पहिरानेके सूती ३ कपड़े ५ गजकी साड़ी कंचुकी चणियाका खर्च। यदि साड़ी आदि रेशमी या जरीवाली चढ़ाना हो तो मूल्य अधिक बैठता है। माँको पहिनायी हुई साड़ी शुभ शकुन रूपसे वापस मँगवानी हो तो साड़ीका मूल्य जमा करा सकते हैं। यह साड़ी बहिनें पहिन सकती हैं। माँकी मूर्ति युवती बहिनोंके प्रमाण (लाइफ साइज) की है। इसलिये ५ गजकी साड़ी पहिनायी जाती है। इस प्रकार ३ कपड़े या अकेली साड़ी भी भेजी जा सकती है। या उसके दाम भेजनेसे बाजारसे लेकर चढ़ाये जाते हैं।

रु० ५००–०० होमात्मक नवचंडीका खर्च ब्राह्मण दक्षिणा भोजन समारंभ आदिमें।

रु० १०००–०० पाठात्मक १०० शतचंडीमें दक्षिणा भोजन पूजन द्रव्य आदि।

रु० ६०००–०० होमात्मक १०० शतचंडी महायज्ञ। दक्षिणा ब्रह्मणभोजन आदिका खर्च।

रु० ५१०००–०० सहस्रचंडी पाठात्मकका खर्च।

होमात्मक महायज्ञ अयुत चंडी (दश हजार) यज्ञका खर्च प्रायः चार लाख रुपया, लक्षचंडी होमात्मक एक लाख, महायज्ञका खर्च प्रायः ३० से ३५ लाख रुपया।

रु० ५०००–०० पाँच हजार रुपया देवी भागवतके नवाह्न पारायण का खर्च।

रु० ५०००–०० पाँच हजार रुपया श्रीमद्भागवतके सप्ताह पारायणका खर्च।

रु० ७०००–०० सात हजार रुपया श्री वाल्मीकि रामायणका नवाह्न पारायण का खर्च।

रु० ५०००–०० पाँच हजार रुपया हरिवंशके सप्ताह पारायणका खर्च।

रु० १२५–०० एक सौ पचीस रुपया नित्य कथाका मासिक खर्च।

रु० २०–०० बाल-भोग नैवेद्यका एक दिनका खर्च।

रु० ४–२५ घीका एक दिनका अखंड दीपका खर्च

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रु० १–२५ तेलका एक दिनका अखंड दीपका खर्च।
रु० १–५० श्रीफल जोड़ी १ (नंग २) का।
रु० ७५–०० मन्दिर भुवनेश्वरी में कथा करानेका ब्राह्मण दक्षिणा प्रसाद भोजन।
रु० ५५–०० पृथ्वीधराचार्य कृत श्री भुवनेश्वरी स्तोत्रके पुरश्चरणका ब्राह्मण भोजन दक्षिणा और माँ के चरणमें।
रु० ५५–०० श्री लघुस्तवके पुरश्चरणका खर्च ब्राह्मण भोजन दक्षिणा आदि।

आश्विन मासकी महानवरात्रि और माघ, चैत्र और आषाढ़ मासकी छोटी नवरात्रि में कुंभस्थापन के साथ शतचंडी महायज्ञ किया जाता है। उस समय अपनी ओरसे जो धार्मिक कार्य करानेकी अभिलाषा भक्तोंको हो तो श्रीपीठमें लिखकर करा सकते हैं।

वैशाख कृष्ण ५ से ९ तक प्रतिष्ठा महोत्सव समारंभ होता हैं। इन दिनों भगवतीकी प्रतिष्ठा हुई थी। इस महोत्सवके ५ दिनमें विविध धार्मिक कार्य अपनी ओरसे करानेका देश विदेशसे भक्त लोग लिखते हैं। उनकी इच्छाअनुसार धार्मिककार्य उस समय कराया जा सकता है।
रु० १२५–०० सौन्दर्य लहरीका पुरश्चरणका खर्च।

जिन्हें श्री माताजीके मंदिरमें कोई बड़ा धार्मिक कार्य कराना हो उन्हें चाहिये कि इसके लिये एकाध मास पूर्व पत्र व्यवहार करके निर्णय करा लें।

रु० २५०००–०० पच्चीस हजार रुपया महारुद्रका खर्च।
रु० १५०००–०० गायत्री पुरश्चरणका खर्च।
रु० १५०००–०० पंद्रह हजार रुपया विष्णुयागका खर्च।

अपने यहाँ पुत्र या पुत्री का संबंध वाग्दान हो, लग्न हो, किसी शास्त्रका पारायण हो उस समय श्री भुवनेश्वरी माँके नाम से इच्छित रकम श्री भुवनेश्वरी पीठ गोंडल (सौराष्ट्र) भारत के पते पर भेज सकते हैं।

माताजीके कवच (पेंडल लोकेट)

यह कवच सभी बहिन, भाई बच्चे सोनाके चेनमें अथवा रेशमी धागामें पिरों कर गलेमें पहन सकते हैं। यह कवच स्त्रियोंके मासिकधर्म या कोई सूतकमें अशुद्ध नहीं होता, ग्राम परग्राम किसी काम के लिये जाते समय अथवा हमेशा पहने रहना यह शकुन है, किसी प्रकारका कष्ट या नौकरी, धंधा उद्योग अंग या संसारिक व धा संकट कष्टमें कवचको धूप देकर पहिनना, कवचमें माताजीकी छवि है उसे सामने रखना, संकटसे मुक्त करनेकी अपना कार्य सफल प्रार्थना करना, कवच को पानीमें ७ सात बार धोना हर वख्त, 'भुवनेश्वरी वद वद वाग्वादिनी स्वाहा, यह मंत्र बोलना, पीछे वह पानी बीमारको पिलानेसे रोग नष्ट होता है। नल, कुअड़, नदी या डंकीसे सीधा शुद्ध पानी लेना चाहिए।

कवचका मूल्य—कवच ३ तरह का है, कारीगरको देनेकी रकम तथा प्राणप्रतिष्ठा करवाकर ब्राह्मणको दक्षिणा आदि मिलाकर कीमत नीचे दी है—

रु० ४–०० चार बड़ा मीणाकारी सवा इंचकी गोलाईका कवच। एक बाँह में माताजी की छवि और दूसरे बाँह में ७५ अंकवाला श्री भुवनेश्वरी पूजनयंत्र मीणाकारी रंगका है।

रु० १–५० डेढ़ रुपया, छोटा मीणाकारी कवच, एक बाँह में माताजीकी छवि, और दूसरी बाँह में ७५ अंकों का यंत्र।

रु० ०–५० आधा रुपया एल्युमीनियमका सोनेरी गिलिटवाला, एक बांह में माताजीकी छवि और दूसरी बांह में ह्रीं बीज है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ श्री भुवनेश्वरी यंत्रम् ॥

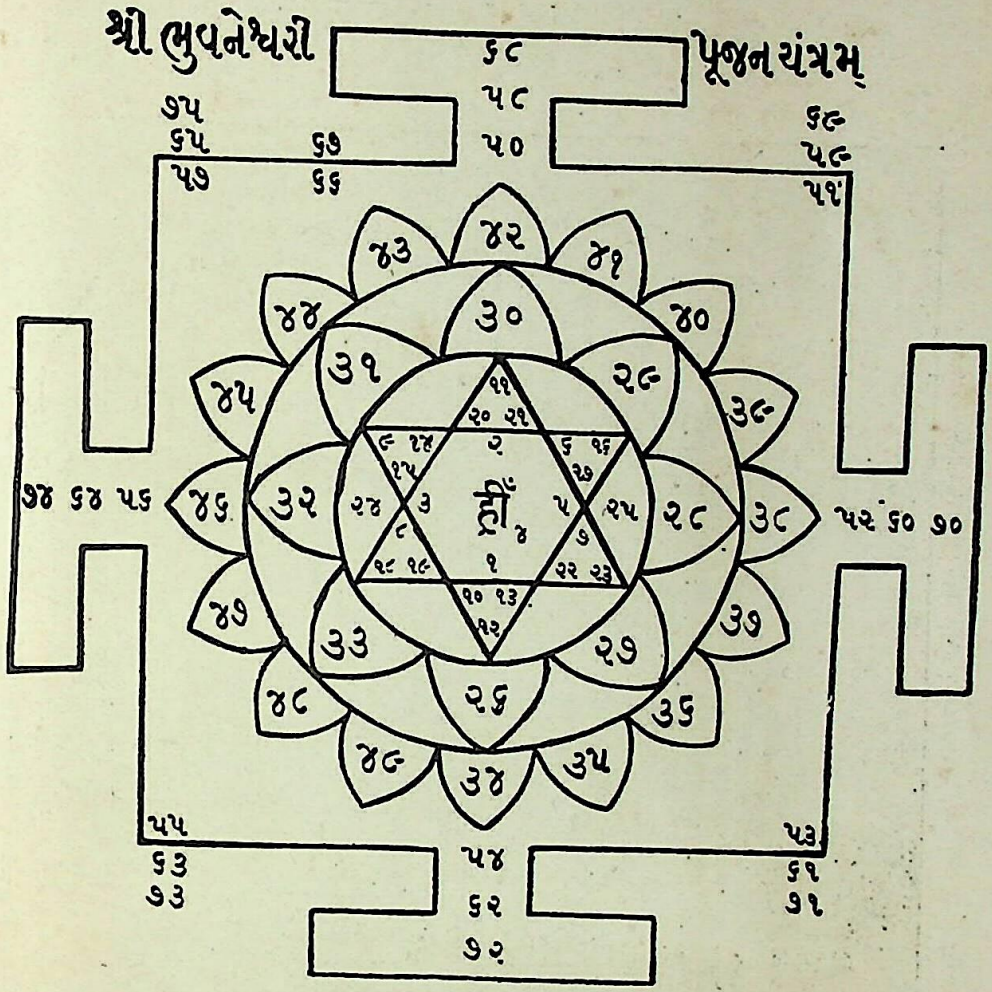

श्री भुवनेश्वरी माता के इस यंत्र की, चाँदी या ताँबे के पत्रक पर खुदवाकर और मढ़वाकर, पूजा की जाती है। इससे सभी इच्छाओं की पूर्ति और मनोरथ सिद्ध होते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री भुवनेश्वरी पीठ का भव्य मंदिर
गोंडल, सौराष्ट्र (भारत)

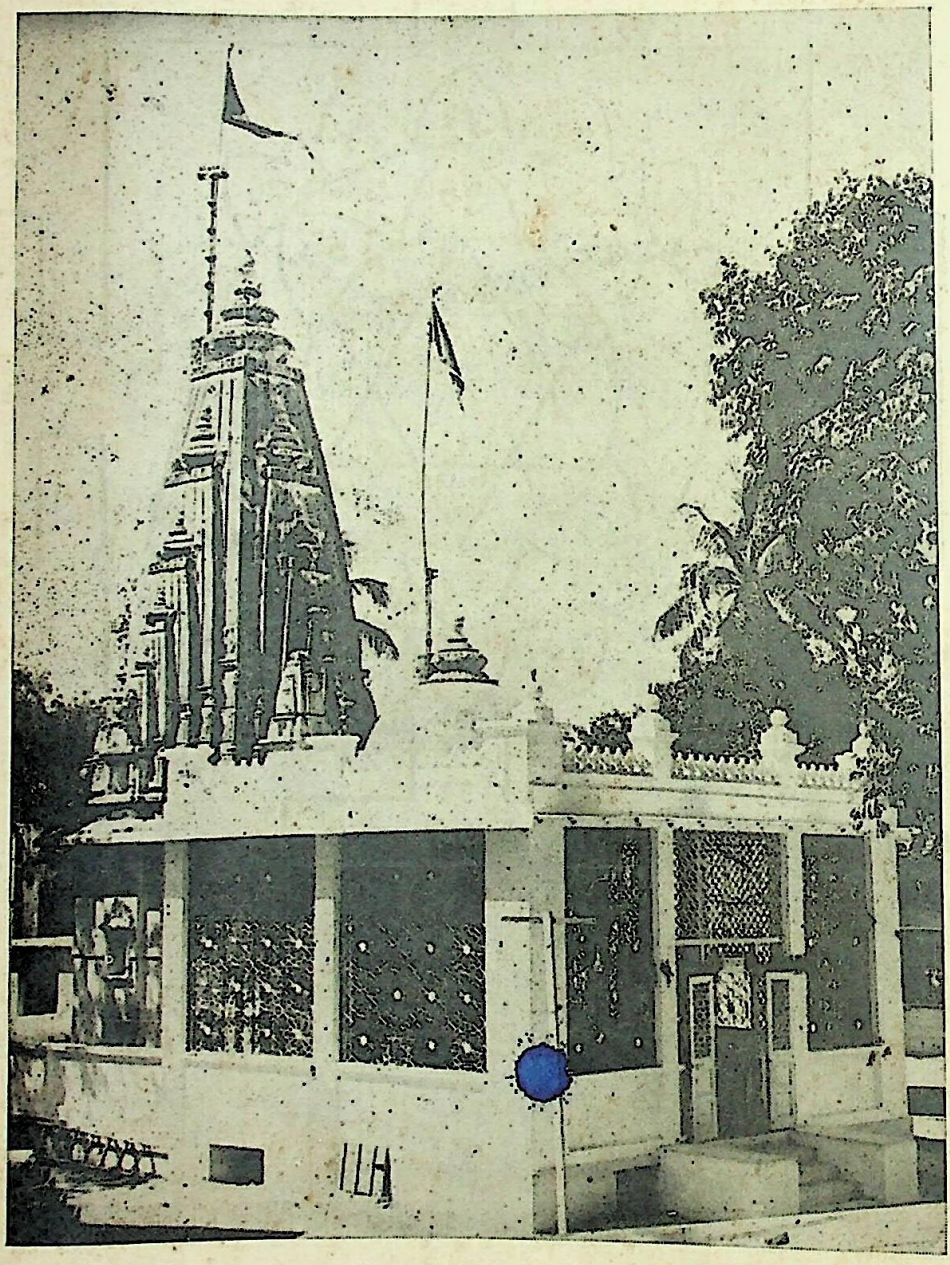

मुद्रक---प्रेम प्रेस, प्रयाग ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi